SAPTHAGIRI
(HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED
MONTHLY
Volume:54, Issue: 02
July-2023, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जुलाई-2023, रू.20/-

दि.04.06.2023 से दि.08.06.2023 तक जम्मू राज्य, मजीन ग्राम में सूर्यपुत्री नदी के किनारे के पास ति.ति.दे. के द्वारा नूतन निर्मित श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर में महासंप्रोक्षण कार्यक्रम को शास्त्रोक्त रूप में आयोजित किया। इस संदर्भ में क्षीराधिवास, विग्रह प्रतिष्ठापन, श्रीनिवास कल्याणम् और आदि वैदिक कार्यक्रमों को निर्वहण किया है। इस कार्यक्रम में जम्मू-काश्मीर का उपराज्यपाल, श्री मनोज सिन्हा, धर्मपत्नी सहित ति.ति.दे. के न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, केंद्रीय मंत्री श्री किशन रेड्डी, श्री जितेंद्र सिन्हा, संसद के सदस्य श्री प्रभाकर रेड्डी, श्री जुगल किशोर शर्मा, ति.ति.दे. के न्यास-मंडली के सदस्य, ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. के साथ आदि अन्य उच्च पधादिकारीगण ने भाग लिया है।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग - २-४)

अर्जुन बोले - हे मधुसूदन! मैं रणभूमि में किस प्रकार बाणों से भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूँगा? क्यों कि हे अरिसूदन! वे दोनों ही पूजनीय हैं।

एतन्माहात्म्य संयुक्तं गीता पाठं करोति थः।
श्रद्धया यः श्रुणोत्येव परमां गतिमाप्नुयात्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

जो मनुष्य इस माहात्म्य के साथ, गीता का पाठ करेगा, या श्रद्धा से सुनेगा वह उत्तमगति को प्राप्त होगा।

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

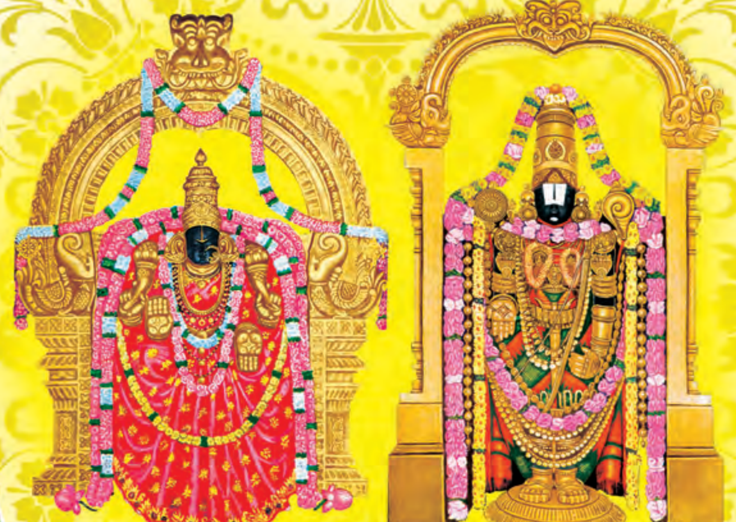

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।
नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५४ जुलाई-२०२३ अंक-०२

विषयसूची

श्रीवैष्णव संप्रदाय मार्गदर्शिका - आचार्य-शिष्य संबंध	श्री कृष्णकुमार गुप्ता	07
व्यास पूर्णिमा	डॉ.एच.एन.गौरीराव	10
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	15
शबरी	डॉ.के.एम.भवानी	19
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	22
ऋषि गर्गाचार्य	डॉ.जी.सुजाता	25
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
गीता का आदेश	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	34
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	36
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	39
भारत की गुणक पद्धतियाँ	डॉ.वी.जगदीश	40
प्रश्न और समाधान	श्रीमती पी.सुजाता	43
खीरे के स्वास्थ्य लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
जुलाई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - वे हैं मेरे गुरु	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - गुरुदक्षिणा	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	50
क्विज - 12		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - आणिवर आस्थान, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - आंडाल। चित्रकारिणी - एन.सी.विष्णुप्रभा

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

सुंदर तिरुमल - हम सबका जिम्मेदार हैं।

पर्यावरण की परिरक्षणा जनसमूह प्रदेशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि यावत् भूभाग से संबंधित है। प्रत्येक रूप से स्वामी के दिव्य क्षेत्र तिरुमल में स्वामी के दर्शन करने के लिए आनेवाले भक्तजनों का और मंदिर के याजमान्य का है। आज सारी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करने के रूप में तिरुमल क्षेत्र आगे बढ रही है। हर दिन लाखों भक्तजन कई मार्गों के द्वारा तिरुमल पहुँच रहे हैं। जहाँ लोगों का समूह रहता है, वहाँ अपने-अपने आचार-व्यवहार के अनुकूल पर्यावरण अनिवार्य हैं। इस कारण कई समस्याओं का सामना करना पडता है। इसके द्वारा प्राकृतिक शोभा से विराजमान तिरुमल दिव्य क्षेत्र पर्यावरण विच्छिन्न होने की संभावना है।

इस विपत्कर परिस्थिति को नियंत्रित करने के लिए ति.ति.देवस्थान के याजमान्य शताधिक प्रयत्न कर रही है। 'जल ही प्राणाधार है।' उस जल को पीने के लिए स्वच्छता की आवश्यकता है। इसलिए जल की संरक्षणा अत्यंत जरूरी है। यात्री लोग प्लास्टिक (सिंथेटिक) बोतलों से पानी लाना, पानी पीकर जहाँ चाहे वहाँ फेंक रहे हैं। इसका निवारण करने के लिए ति.ति.दे. कई प्रसारमाध्यमों के द्वारा विस्तृत प्रचार करते हुए ज्यादा तक नियंत्रित कर रही है। वैसे ही कूडे-करकट इकट्ठा होने के कारण बीमारी फैलकर कई रोग बढने का कारण बन रही है। इस परिस्थिति का सामना करने के लिए ति.ति.दे. हमेशा प्रयत्न कर रही है। भक्तजन भी यह जानना जरूरी है कि जहाँ चाहे वहाँ कूडे-करकट फेंकना मना है।

पर्यावरण को भंग करनेवाले कामों से तिरुमल के अमूल्य वृक्षसंपदा, ओषध के पौधे नाश होने की संभावना है। इसके साथ वायु कालुष्य भी एक है। इस परिस्थिति से बचाने के लिए वृक्षसंपदा के लाभों के बारे में ति.ति.दे. कई तरह के प्रचार कर रही है। क्षेत्र पर्यावरण की रक्षा हेतु ति.ति.दे. ने निघा को बढ़ावा दिया है। पुष्करिणी की परिरक्षणा भी हम सबका जिम्मेदार हैं। पुष्करिणी में स्नान करके, कपडे धोने से जल कलुषित हो जाता है। इस संकट का निवारण करने के लिए पुष्करिणी में जलशुद्धि-यंत्रों का प्रबंध किया गया है। पर्यावरण-परिरक्षणा और आरोग्यसूत्रों का अटूट संबंध है। तिरुमल को पैदल आनेवाले भक्तजन रास्ते में अपरिशुभ्र नहीं करने के हेतु ति.ति.दे. कई आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध किया है।

भगवान की दृष्टि में 'पंचभूत' अत्यंत प्रधान है। इसकी परिरक्षणा करने से पर्यावरण की परिरक्षणा आसान हो जाता है। चिकित्सा से व्याधि की निवारण उत्तमोत्तम है। इसलिए तिरुमल दिव्यक्षेत्र के पंचभूतों की परिरक्षणा हर-एक भक्त का आवश्यक कर्त्तव्य है। यही 'सामूहिक याग' है। इस याग स्वयं नियंत्रणा के द्वारा ही सफलीकृत हो जाता है। भक्तजन प्लास्टिक (सिंथेटिक) चीजों का उपयोग करना छोड देना है। इनके उपयोग करने से पर्यावरण ज्यादा नष्ट होने की संभावना है। इसलिए ति.ति.दे. भक्तजनों से यही कहना चाहती है कि भक्तजन कम-से-कम अपनी चिंतन-मनन से प्लास्टिक चीजों को साथ ले आना छोडकर तिरुमल को 'सुंदर-तिरुमल' के रूप में देखने के लिए कदम बढाना हर-एक का कर्त्तव्य है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव संप्रदाय मार्गदर्शिका आचार्य शिष्य संबंध

- श्री कृष्णकुमार गुप्ता

अपने पूर्व अनुच्छेद में हमने देखा कि किस प्रकार पंच संस्कार द्वारा जीव अपनी श्रीवैष्णव यात्रा प्रारंभ करता है। हमने आचार्य और शिष्य संबंध के माध्यम से एक अद्वितीय संबंध के आरंभ को भी देखा। क्योंकि यह हमारे संप्रदाय का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है, आईये अपने पूर्वाचार्यों की श्रीसूक्तियों के द्वारा इस अद्भुत संबंध के विषय में थोडा और समझते है।

आचार्य अर्थात् ''जिन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है, और जो स्वयं अपने जीवन में उन शास्त्रों का अनुसरण करते है और दूसरों को अपने उत्कृष्ट उदाहरण से प्रेरित करते है।'' शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि ''संन्यासी भी यदि 'श्रीविष्णु परत्वं' को स्वीकार नहीं करते है, तब वे चाण्डाल के समान ही है''। इसलिए यह सर्वविदित है कि आचार्य भी श्रीवैष्णव ही होने चाहिए - अर्थात् वह जो श्रीमन्नारायण भगवान को ही सर्वेश्वर/सर्वोत्तम स्वीकार करते है और प्रत्येक क्षण अपने प्रत्येक कार्य के द्वारा उनकी प्रसन्नता की चाहना करते है। हमारे पूर्वाचार्यों ने इस बात पर जोर दिया है कि पंच संस्कार में तिरुमंत्र उपदेश (द्वयं और चरम श्लोक भी) प्रदान करने वाले ही हमारे प्रत्यक्ष आचार्य है।

शिष्य, वह जो शिक्षा (सुधार) प्राप्त करता है। अंग्रेजी में इसे प्रायः अनुयायी के रूप में भी प्रयोग किया जाता है- अर्थात् वह जिसे अनुशासित करना हो। यहाँ शिष्य स्वयं को आचार्य के सानिध्य में उचित सांचे में ढालते है।

हमारे पूर्वाचार्यों ने आचार्य और शिष्य के गुणों के विषय में अत्यंत विस्तार पूर्वक चर्चा की है। प्रारंभ करने

के लिए, शास्त्रों के आधार पर उन्होंने यह स्थापित किया कि आचार्य-शिष्य संबंध पिता-पुत्र संबंध के समान ही है। जिस प्रकार एक पुत्र सदा अपने पिता की सेवा में रहता है, उसी प्रकार शिष्य को भी संपूर्णतः आचार्य के अधीन उनकी सेवा में रहना चाहिए।

भगवद्‌गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते है *''तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः''।* यह आचार्य और शिष्य के गुणों को सुंदरता से विश्लेषित करते है। प्रथम पंक्ति में वे कहते है ''हमें विनम्रता से आचार्य के समीप जाना चाहिए, विनम्रता से उनके प्रति कैंकर्य करना चाहिए और अत्यंत ही नम्रतापूर्वक उनसे प्रश्न पूछना चाहिए''। द्वितीय पंक्ति में वे कहते है ''आचार्य तुम्हें वह ज्ञान प्रदान करेंगे, क्योंकि उन्होंने सच्चे तत्व (अर्थात् भगवान) को प्राप्त किया है''। आचार्य से अपेक्षित कुछ गुण इस प्रकार है :

1) आचार्यों की उपमा प्रायः श्रीमहालक्ष्मीजी से की जाती है- उनका प्रमुख उद्धेश्य भगवान से पुरुष्कार करना है (अनुशंसा करना जैसा की देवीजी करती है)।

2) श्रीदेवीजी के ही समान, उन्हें भी यह स्वीकार करना चाहिए कि वे एक मात्र भगवान के ही दास है, वे भगवान को ही उपाय स्वीकार करते है और उनके समस्त कार्य भगवान की प्रसन्नता हेतु ही है।

3) उन्हें कृपा से परिपूर्ण होकर शिष्य को स्वीकार करना चाहिए, उसके आत्म ज्ञान (स्वयं के विषय में ज्ञान) का विकास करके और वैराग्य (विरक्ति) उत्पन्न कराके, शिष्य को भगवत/भागवत कैंकर्य में लगने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

4) श्री वरवरमुनि स्वामीजी की दिव्य श्री सूक्ति के अनुसार, आचार्य को सदा शिष्य के आत्म-रक्षण (आत्मा के उद्धार) के बाबत फिकर करनी चाहिए।

5) पिळ्ळै लोकाचार्य कहते है ''एक आचार्य को स्वयं, शिष्य और परिणाम के विषय में उचित ज्ञान होना आवश्यक है''।

6) उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि वे आचार्य नहीं, वरन उनके आचार्य ही शिष्य के आचार्य है।

7) उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि शिष्य उनके शिष्य नहीं, वरन उनके आचार्य के शिष्य है।

8) उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि इस संबंध का प्रतिफल एक परिपक्व शिष्य का निर्माण करने से है, जो सदा भगवान का मंगलाशासन करे - अन्य कुछ नहीं।

9) जैसा की वार्तामाला ग्रंथ और शिष्टाचार में बताया गया है, आचार्य को अपने शिष्य के प्रति सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए - क्योंकि शिष्य ने शास्त्रों के आधार पर अपने संपूर्ण संरक्षण हेतु आचार्य (उनके गुण/अनुभव का विश्लेषण किये बिना) शरण ली है।

10) हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा यह समझाया गया है कि भगवान को भी आचार्य रूप धारण करना प्रीतिकर है। इसी हेतु उन्होंने हमारी ओराण वालि गुरु परंपरा में प्रथमाचार्य होना स्वीकार किया। भगवान स्वयं अपने हेतु भी एक आचार्य की चाहना करते है - और इसीलिए उन्होंने स्वयं के लिए श्रेष्ठ/अत्योचित आचार्य अर्थात् श्री वरवरमुनि स्वामीजी को स्वीकार किया।

शिष्य से अपेक्षित कुछ गुण इस प्रकार है :

पिल्लै लोकाचार्य कहते है-

1) शिष्य को भगवान और आचार्य के अतिरिक्त सभी अन्य प्रयोजनों से स्वयं को मुक्त करना चाहिए (अर्थात ऐश्वर्य और आत्मानुभव)।

2) शिष्य को सदैव सभी परिस्थितियों में अपने आचार्य की सेवा कैंकर्य के लिए तत्पर रहना चाहिए।

3) इस लौकिक संसार को देखकर शिष्य को मानसिक यंत्रणा का अनुभव करना चाहिए।

4) शिष्य को भगवत विषय और आचार्य कैंकर्य की अभिलाषा सदैव करनी चाहिए।

5) भगवत/ भागवतों की प्रशंसा/ कीर्ति को जानकार शिष्य को ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

6) एक शिष्य को सदा यह ध्यान करना चाहिए कि उसकी सभी संपत्ति आचार्य की है। उसे उस धन संपत्ति में से उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना की संसार में देह धारण (जीविका) के लिए आवश्यक है।

7) एक शिष्य को सदा यह सोचना चाहिए कि आचार्य ही मेरे लिए सर्वोपरि है, जैसा की श्री यामुनाचार्य स्वामीजी ने आलवन्दार स्तोत्र में ''माता पिता युवतयः ...'' श्लोक में दर्शाया है।

8) शिष्य को अपने आचार्य के जीवन-यापन का ध्यान रखना चाहिए।

9) श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्न माला में समझाते है कि ''इस संसार में रहते हुए शिष्य को कदापि अपने आचार्य से दूर नहीं रहना चाहिये''।

10) आचार्य की उपस्थिति में शिष्य को सदा उनका यशगान करना चाहिए और उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान के लिए सदा उनके प्रति उपकार स्मृति रखना (ऋणी रहना) चाहिए।

यह भी समझाया गया है कि एक शिष्य के लिए आचार्य का आत्म-रक्षण करना अनुचित है (अर्थात, शिष्य को कभी भी आचार्य को स्वरूप शिक्षा नहीं देनी चाहिए) और आचार्य के लिए शिष्य का देह रक्षण करना अनुचित है (अर्थात्, शिष्य को अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि आचार्य उसकी आजीविका ध्यान रखे)।

जैसा की पिल्लै लोकाचार्य द्वारा समझाया गया है, शिष्य होना अत्यंत कठिन है (और चाहे हम कितना भी ज्ञान प्राप्त करले, हम उचित शिष्य शिष्टाचार कभी नहीं समझ पाएंगे)। इसी हेतु स्वयं भगवान ने ''नर'' ऋषि का स्वरूप धारण कर, ''नारायण'' ऋषि (जो भगवान के अवतार है) के शिष्य होकर उनसे तिरुमंत्र का उपदेश प्राप्त किया और दर्शाया की योग्य शिष्य को कैसा होना चाहिए।

क्रमशः

अगस्त 2023

०९. आडिकृत्तिका
१५. भारत स्वतंत्रता दिवस
२०. नागचतुर्थी
२१. गरुड पंचमी
२५. श्री वरलक्ष्मीव्रत,
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
२६ से २९ तक तिरुमल
श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
३०. श्री विरवनस महामुनि जयंती,
राखी पूर्णिमा
३१. श्री हयग्रीव जयंती, गायत्रीजपम्

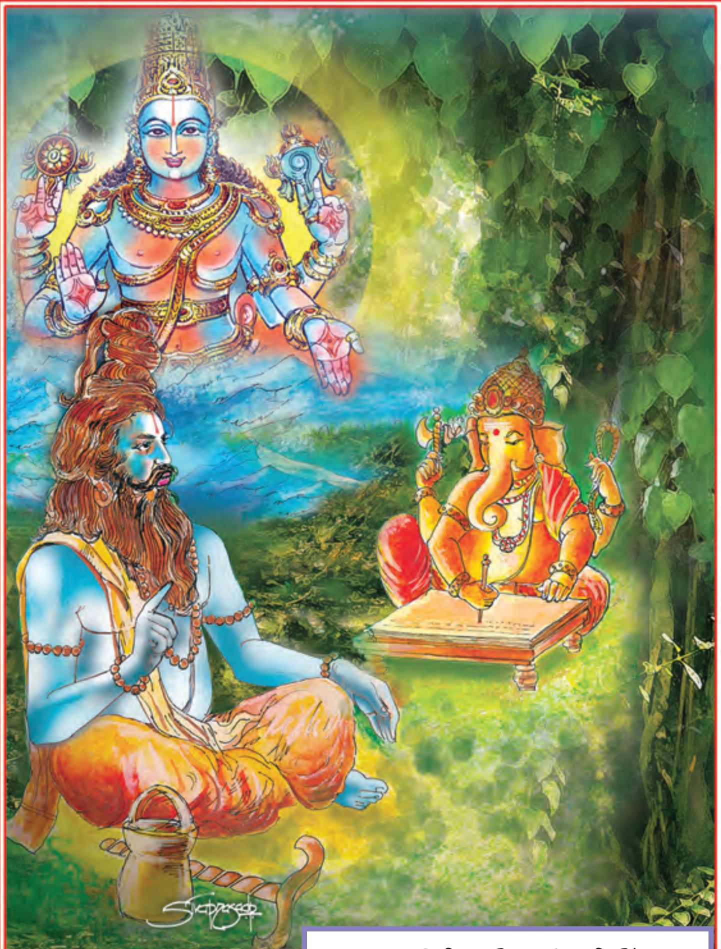

गुरु पूर्णिमा के संदर्भ में...

व्यास पूर्णिमा

-डॉ.एच.एन.गौरीराव

व्यास पूर्णिमा महान पुरुष वेदव्यास की जयंती है, जिसके बिना हिंदू वांग्मय ज्ञान तथा संस्कृति की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। वाल्मीकि की ही तरह व्यास भी सुप्रसिद्‌ध है। इनका जन्म 3000 ई.पू आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ था। इसलिए इस दिन को 'व्यास पूर्णिमा' कहा जाता है। व्यास पूर्णिमा के दिन शिष्य अपने गुरुओं की वंदना करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। व्यास ने भारत के विशाल सांस्कृतिक इतिहास को संरक्षित किया और भारतीय वांग्मय संपदा को धरोहर के रूप में हमें सौंपा है। इससे वे जगत के आदिगुरु कहलाए। गुरु-शिष्य के संबंध को सुदृढ बनाये रखने के लिए तथा व्यास भगवान की महानता को याद करते हुए आषाढ पूर्णिमा के दिन को 'गुरु पूर्णिमा' के रूप में भी पर्व मनाया जाता है।

वेदव्यास का जीवन परिचय

वेदव्यास ने भारतीय वांग्मय वेद तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों को लिपिबद्ध करके संरक्षित किया और प्रचार प्रसार किया। जैसे उन्होंने इस महान कार्य के लिए अपने जीवन को समर्पित किया, वह कार्य ही उनके जीवन का परिचय है। हिंदू संस्कृति में वेदव्यास जी का बहुत बडा योगदान है। वेदव्यास जी का जन्म द्वापरयुग में हुआ था। उनके पिता पराशर महर्षि थे और माता देवी सत्यवती थी। 'विष्णुसहस्रनाम' में इनके वंशजों का भी वर्णन है-

''व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।।

अर्थात् महर्षि वशिष्ठ के प्रपौत्र, महर्षि शक्ति के पौत्र, महर्षि पराशर के पुत्र एवं महर्षि शुक के पिता निष्कलंक, तपोनिधि वेदव्यास का वन्दन करता हूँ।

वेदव्यास का जन्म यमुना के तट पर एक द्वीप में हुआ था। इसलिए वे 'द्वैपापन' कहलाए,

और श्याम वर्ण के होने से 'कृष्ण' कहलाए। इन दोनों नामों को मिलाकर वे 'कृष्णद्वैपायन' कहलाए। वेदव्यास के नाम पर उनके जन्म स्थान में व्यास मंदिर है। उस स्थान का आधुनिक नाम कालपी है जो उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में हैं। महर्षि वेदव्यास बाल्य काल से इतनी बुद्धिमत्ता रखते थे कि वे किसी भी चीज को आसान से समझ लेते थे। अपने पिता की तरह तीक्ष्ण बुद्धिवाले वेदव्यास जी बचपन से अपने पिता को ही अपना गुरु मानते थे। वेदव्यास जी को अपने बाल्यकाल में ही सभी शास्त्रों, वेद, पुराणों का ज्ञान प्राप्त हो चुका था और उस समय उनके ज्ञान के आगे कोई नहीं टिक पाता था। वे अपने छुटपन में तपस्या करना चाहते थे। माता सत्यवती इससे सहमत नहीं थी। परंतु जब चाहे तब प्रत्यक्ष होने का प्रण अपनी माता को दे कर वे अपने पिता की तरह तपस्या करने चले गए। कृष्णद्वैपायन अपनी तपस्या बदरीवन में किया था। इससे इनका एक और नाम पडा 'बादरायण'। व्यासपुर (बिलासपुर) महर्षी वेदव्यास की तपोस्थली है। यहाँ वेदव्यास जी का मंदिर और श्री व्यास सरोवर है। अपनी माँ के आशीर्वाद और पिता के तपोबल से वे एक प्रसिद्ध महामुनि बने। कृष्णद्वैपायन ने तपस्या करके अपार ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने वासुदेव और सनकादि जैसे महान संतों से ज्ञान प्राप्त किया। इनकी पत्नी आरुणि थी और पुत्र महान बाल योगी शुकदेव था। शुकदेव ने ही परीक्षित को श्रीमद्भागवत पुराण की कथा सुनायी थी।

वेदों का वेद विभाजन

प्राचीन काल में वेद एक ही था। पर कभी भी ग्रंथस्थ नहीं हुआ था। गुरुकुल में गुरु द्वारा शिष्यों को मौखिक रूप में वेद को सिखाया जाता था। इससे वेद को श्रुति भी कहा गया है। कृष्णद्वैपायन ने द्वापरयुग के अंत आने तक आनेवाले कलियुग के बारे में जान लिया कि लोग अधर्मी हो जाएंगे और धर्म का नष्ट होगा। मनुष्य अल्पमतिवाला होगा और इससे वह विशाल वेद का सांगोपांग अध्ययन नहीं कर सकेगा। अतः उन्होंने वेदज्ञान को बचाने के लिए और सामान्य लोगों तक पहुँचाने के लिए चार भागों में शास्त्रीय रूप से विभाजन करके लिपिबद्ध किया। उनका नाम रखा- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनको क्रमशः अपने शिष्य पैल, जैमिन, वैशम्पायन और सुमन्तुमुनि को पढाया। व्यास जी के शिष्यों ने उन वेदों की अनेक शाखाएँ और उप-शाखाएँ बना दीं। उपनिषदों का सार तत्व समझाने के लिए व्यास जी ने ब्रह्मसूत्र को रचा। उत्तर प्रदेश के नैमिषारण्य में बादरायण ने वेदों का विभाजन किया। व्यास का अर्थ होता है समग्र विभाजन। वेदों का विभाजन करने से इनका नाम पडा 'वेदव्यास'। व्यास जी का यह काम कोई सामान्य काम नहीं है। इस असाधारण कार्य के लिए उनको भगवान विष्णु का प्रतिरूप मानते हैं।

विष्णुसहस्रनाम में एक श्लोक है -

व्यासाय विष्णु रूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः।

इस श्लोक का अर्थ है कि वेदव्यास साक्षात् भगवान विष्णु का हो स्वरूप है और भगवान विष्णु हो वेदव्यास हैं।

पुराणों की रचना

वेद के ज्ञान को सीखना और समझना अत्यन्त कठिन होने से वेदव्यास ने अठारह पुराणों की रचना की। इनके नाम कुछ इस प्रकार हैं - ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, लिंग पुराण, वराह पुराण, स्कन्द पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण। इनमें वेद के ज्ञान को आकर्षक कथाओं

के रूप में बताया गया है। भगवान के भक्त, धर्म परायण लोगों की कथाएँ पुराणों में सम्मिलित हैं। इसके साथ-साथ व्रत-उपवास की विधि, तीर्थों का माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है। पुराणों के ज्ञान को उन्होंने अपने शिष्य रोम-हर्षण को दिया।

महाभारत की रचना

जिन लोगों को वेदों को सीखना मुश्किल था उनके लिए व्यास जी ने महाभारत की रचना की, जो विश्व का सबसे लंबा साहित्यिक ग्रंथ है। महाभारत में वेदों का संपूर्ण ज्ञान बडे ही सरल ढंग से निहित किया गया हैं। इस ग्रन्थ को 'पंचम वेद' माना जाता है। यह भारत का धार्मिक, दार्शनिक, पौराणिक, ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ है। महर्षि व्यास केवल महाभारत का रचनाकार ही नहीं स्वयं उसका पात्र भी है। वे महाभारत के घटनाओं के साक्षी भी माने जाते हैं। वे अलौकिक शक्ति-संपन्न महाविद्वान हैं। वे धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुर के जन्मदाता थे। व्यास जी से इन तीनों का नियोग पद्धति से जन्म हुआ था। हर कोई वेदव्यास का समान रूप से सम्मान करते दिखाई पढते हैं। जब-जब अंतर्द्वंद्व और संकट की स्थिति आती, माता सत्यवती उनसे विचार-विमर्श करती थी। विपत्ति के समय में पाण्डवों का साथ देते थे। वे त्रिकाल ज्ञानी थे। राजासूय यज्ञ के अवसर पर व्यास जी ने युधिष्ठिर को 13 साल के बाद होने वाले महायुद्ध में क्षत्रियों का नाश तथा दुर्योधन के विनाश के बारे में जानकारी देते हैं। भगवान व्यास ने संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान की, जिससे युद्ध-दर्शन के साथ भगवान कृष्ण का विश्वरूप का दर्शन किया और विश्व विख्यात गीतासार को सुना।

महाभारत में कुल 18 अध्याय हैं। पूरे महाभारत में लगभग 1,10,000 श्लोक हैं। महर्षि वेदव्यास तथा गणेश जी से उत्तरखंड में बद्रीनाथ धाम के समीप माणा गांव के एक गुफा में तीन वर्षों के अथक परिश्रम से दुनिया का सबसे बडा महाकाव्य लिखा गया। वर्तमान में इस गुफा में व्यास जी का मंदिर बना हुआ है। व्यास गुफा में व्यास जी के साथ उनके पुत्र शुकदेव जी की प्रतिमा तथा भगवान विष्णु की भी एक प्राचीन मूर्ति है। गुफा के अंधकार को दूर करने के लिए एक दीपक जलता रहता है। यह इस बात को दर्शाता कि वेदव्यास जी ने अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार के अंधकार को दूर करने का महान कार्य इसी गुफा में किया था। व्यास गुफा को बाहर से देखने से ऐसा लगता है कि मानों कई ग्रंथ एक दूसरे के ऊपर रखे हुए हैं? इसलिए यह 'व्यास पोथी' भी कहा जाता हैं। वेदव्यास जी ने महाभारत को बिना रुकावट के बोलते रहे और गणेश जी इसको लिपिबद्ध किया। विश्व प्रसिद्ध भगवद्गीता भी महाभारत का एक अंश है। गीता किसी के भी जीवन में सुख-दुःख में समभाव से जीने की तरीके को और निष्काम कर्म करने को बताता है। वेदव्यास जी द्वारा महाभारत लिखने का मुख्य उद्देश्य इस भौतिक जीवन की निःसारता को दिखाना है। व्यास जी के इस असाधारण कार्य के लिए भगवद्गीता में उनकी स्तुति में कहा गया है-

''नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वयाभारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।''

अर्थात् खिले हुए कमल की पंखुडियों के समान नेत्रोंवाले, महाबुद्धिमान व्यासदेव! आपने महाभारत रूपों तेल से पूर्ण ज्ञानमय दीप को प्रज्वलित किया है, आपको नमस्कार।

अमर हैं महर्षि वेदव्यास

धर्मग्रंथों के अनुसार महर्षि वेदव्यास अष्ट चिरंजीवियों में एक है, अतः वे अमर हैं। इस बात का प्रमाण है यह श्लोक -

''अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित।।''

इसका अर्थ है - अश्वथामा, बलि, वेदव्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, पराशुराम और मार्कण्डेय ऋषि ये आठ अमर है। रोज सुबह इनके नाम लेने से मनुष्य निरोगी बनता है तथा लंबी आयु मिलती है।

गुरु पूजा का महत्व

साधारणतया गुरु वह है जो माता-पिता के बाद मनुष्य को सही मार्गदर्शन करता है। गुरु अपने ज्ञान निधि को शिष्य को सौंपकर अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। हिंदू परंपरा के अनुसार गुरु पूजा करना शुभ और मंगलमय माना जाता है। शिक्षक या गुरु ही मोक्ष का मार्ग दिखा सकता है। इसलिए एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है-

''गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।''

इसका अर्थ है कि गुरु भगवान ब्रह्म, गुरु भगवान विष्णु तथा वे स्वयं भगवान शिव हैं। इसीलिए सभी को गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए। हिन्दू परंपरा में व्यास पूर्णिमा के दिन गुरु पूजा का बहुत महत्व है।

व्यास पूजा करने की तरीका

पूरे भारत में बडों श्रद्धा और उल्लास के साथ व्यास पूर्णिमा मनाया जाता है। सुबह जल्दी उठकर स्नानादि नैमित्तिक दिनचर्या के बाद शुभ्र वस्त्र धारण करके शुचि होकर पूजा स्थल को पवित्र करना चाहिए। पूजा स्थल के पूर्वी दिशा अथवा उत्तरी दिशा में पूजा मंडप रखकर एक पीठ पर व्यास जी का चित्रपट रखकर सब गुरुओं तथा इष्ट देवता का आवाहन करना चाहिए। गुरु पूजा का संकल्प करके व्यास जी के साथ अपने गुरुओं का स्मरण करते हुए ''गुरु परंपरा सिद्ध्यर्थम व्यास पूजाम करिष्ये'' मंत्र पढके कुंकुम, गंध, पुष्प, अक्षत से षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। चित्रपट को मालार्पण करके धूप-धीप गुरुदेव को चढ़ाकर फल और मिठाई का नैवेद्य अर्पित करके अंत में भगवान की आरती उतारनी चाहिए। हमें गुरुओं से प्रार्थना करके कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए जिन्होंने हमारा ज्ञान वर्धन करके जीने

योग्य बनाया। गुरु पूजा के बाद गुरु का आशीर्वाद लेना चाहिए। गुरु के आशीर्वाद से बढ़कर कुछ भी नहीं है और वही हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

सामूहिक रूप से विद्या संस्थाओं में आडंबरता से व्यास पूर्णिमा मनाई जाती है। अनेक मठों में और आश्रमों में इस दिन वहां के गुरु को उच्च आसन पर बिठाकर पाद पूजा करके व्यास पूर्णिमा मनाई जाती है। इस दिन शिष्य अपने गुरु को यथाशक्ति दक्षिणा, फल, वस्त्र आदि भेंट करते हैं। इस सुदिन को पूजा के बाद सत्संग, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विद्या अर्जन करने वाले श्रद्धालु विद्यार्थियों के लिए गुरु पूर्णिमा का दिन महत्वपूर्ण माना गया है। यह दिन विद्यारंभ करने के लिए पावन दिन होता था।

वेदव्यास जी के कुछ प्रसिद्ध मंदिर

उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में कालपी का व्यास मंदिर, उत्तराखंड के बद्रीनाथ धाम के पास माणा का व्यास गुफा, वाराणसी का व्यास मंदिर, तथा राउरकेला के पास ब्राह्मणी नदी पर स्थित महर्षि वेदव्यास का मंदिर, राजस्थान के करौली से 30 किलोमीटर की दूरी पर भांकरी गांव में स्थित वेदव्यास जी का प्राचीन मंदिर आदि कुछ प्रसिद्ध व्यास मंदिर हैं। देशभर के वेदव्यास के मंदिरों में व्यास पूर्णिमा के दिन विशेष अलंकार तथा पूजा की जाती है। वैभवता से उत्सव मनाया जाता है और मेले का आयोजन किया जाता है। इस मेले में लाखों लोग उल्लास के साथ भाग लेते हैं।

जगत के आदिगुरु वेदव्यास ने लोकहित के लिए वेदों का विभाजन करके, पुराण, महाभारत लिखकर हमारी संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास को सामान्य मानव तक पहुंचाया। ये हमारे सफल जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को ज्ञान की निधि दिया है। उनका साहित्य कालजयी है। अलौकिक बुद्धि, असीम शक्ति से संपन्न महर्षि व्यास को मनीषियों ने त्रिदेवों के समकक्ष बिठाया -

''अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुपरोहरिः।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान्बदरायणः।।''

अर्थात् श्री व्यासदेव चतुर्मुख न होते हुए भी ब्रह्म, दो भुजाओं वाले होते हुए भी विष्णु तथा त्रिनेत्रधारी न होते हुए भी साक्षात् शिव ही हैं।

वेदव्यास भगवान द्वारा दी गई शिक्षाएँ आज के समय में भी प्रासंगिक है। वेदव्यास अपने ज्ञान के प्रकाश को सर्वत्र फैलाया है। हम सब को व्यास पूर्णिमा के दिन इस महान पुरुष का स्मरण करने से उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। महान ज्ञानी, निःस्वार्थी, हितैशी, महर्षि वेदव्यास जी को कोटि कोटि प्रणाम करते हैं।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

द्वितीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

ब्रह्म के द्वारा प्रकटित कामनाएँ :

"हे जनक! इस शैलाग्र पर जिस रूप में आप खडे हुए हैं उसी रूप में जनों को भी कल्पांतर तक दर्शन देते रहिए।" "यह क्यों है?" प्रश्न करने पर "इस अवनि पर जन्म लेनेवाले मनुष्य सत्य, शौचाचार आदि को छोड कर अधर्मी हो जायेंगे इस कलियुग में। इसलिए यम उन्हें महानरक ले जाएंगे।, डांटते उन्हें बहुत बाधाएँ पहुँचाएंगे। बाद में उन को छोडने पर भी अनेक प्रकार के दु:ख और रोगों से मरते फिर जन्म लेते रहते हैं इस भू-थल में। उनका उद्धार करने के लिए यहाँ पर कोई नहीं है। हे स्वामी! आप ही को उन की रक्षा करनी चाहिए। कलियुग में मनुष्यों को होनेवाली अल्पायु, दुराग्रह, कठिन, लोभी, कामुक, कपटी, क्रोधी, जडमति, कुत्सित बुद्धिवाले, परधनासक्त, परसती को मोहनेवाले, दुर्भाग्य, गर्वी, पामर, साधुदूषक, मात्सर्य संकलित, जारु, चोर, सकल पाप करके वे कष्ट-संकट को प्राप्त करेंगे। उन का उद्धार करने आप वेंकटगिरि पर ही रहते हुए, हे परमपिता! उन की रक्षा करते रहिए।" ब्रह्म की इन बातों को सुन कर विष्णु ने इस रूप में कहा। "अहो कुमार! अपने मन में रहनेवाले विचार को तुम ने बहुत अच्छे ढंग से बताया। इस महान भूत दया रखनेवाले तुम्हारी प्रशंसा करूँगा। जनहित करने के लिए इसी शेषाचल पर ही रहूँगा। हे पद्मज! सकल तीर्थों का स्वामी तीर्थ पुष्करिणी को वैकुंठ से मंगा कर यहाँ रखवाया। इस पर्वत पर इस पुष्करिणी के रहते प्रजा पाप कैसे प्राप्त करेगी।। वैकुंठ में पापमुक्त से दीपित सत्पुण्य तीर्थ है यह, यह भी नहीं गंगादि तीर्थों के लिए स्वामी बन कर इस शेषाचल पर महती ढंग से रहनेवाली इस पुष्करिणी में भक्ति से स्नान करनेवाले जनों के सारे पाप, सकल रोग दूर हो जायेंगे। और उन्हें संपदाएँ प्राप्त होंगी। धरती पर उन की सारी कामनाएँ मैं पूरा करता रहूँगा। हे जलजगर्भ! तुम चिंता मत करो। आनंद से रहो।" इस रूप में कहनेवाले चक्री को देख कर ब्रह्म ने इस रूप में कहा। "दुष्ट राक्षस भूलोक में वनदुर्गों में छिपे रह कर पर्वत पर रहनेवाले जनों को सतायेंगे। इसलिए हे ईशा! यह पर्वत दुर्भेद्य होना आवश्यक है।" कहने पर सुन कर चक्र की तरफ देख कर विष्णु ने इस रूप में कहा। "हे चक्र राज! तुम

अपने लोगों को लेकर विविध आयुधों के साथ शीघ्र जाकर अभी राक्षसों का संहार करो।'' विष्णु की ये बातें सुन कर विष्णु को नमन करके चक्र ने अपनी सेना के साथ निकल कर प्रलय कालभील भानुबिंब की तरह शीघ्र ही जाकर सकल दुर्गों में रहनेवाले जन-देव कंटकों पर युद्ध प्रकट किया। उन राक्षसों पर क्रोध दिखाते उन पर आक्रमण करके उन्हें संहार करके सकल देशों को ठीक करके फिर शीघ्र ही हरि के पास निज बल के साथ लौट कर नमन करके इस रूप में कहा। ''हे स्वामी! रावण के बलों का संहार करके आया हूँ।'' वासुदेव ने तब चक्र को ग्रहण करके ब्रह्म से कहा। ''हे जलजगर्भ! तुम्हारे कहने के अनुसार ही चक्र ने जा कर राक्षसों का संहार किया है। अब जन की चिंता छोड कर अपने निजी स्थान पर लौट जाओ।'' इस रूप में कहने पर भी ब्रह्म वहाँ से नहीं निकले। ऐसे ब्रह्म को देखकर विष्णु ने कहा। ''हे वनजज! मेरे जाने के कहने पर भी तुम नहीं गए। अब तुम्हारे मन में कौन-सी कामनाएँ बची है?'' यह सुन कर ब्रह्म बहुत विनय के साथ इस रूप में कहा। ''हे देव! आप और रमादेवी मेरी विनति को स्वीकार करना चाहिए। वह यह है कि मेरे मन में वेंकटगिरि पर अत्यंत प्रसिद्ध और उन्नत आपके रथोत्सव करवाने की कामना है। आप इस की आज्ञा दीजिए।'' ब्रह्म की इस विनति को सुन कर महाविष्णु ने सिरि के साथ मिल कर सम्मति दी। तब ब्रह्म ने अत्यंत संतोष के साथ मुनिगण, देवताओं से मिल कर तब से स्वामी के रथोत्सव के लिए प्रयत्न करना शुरू किया। विश्वकर्मा को बुला कर वहाँ पर चित्रपुर का निर्माण करने के लिए कहा। साथ ही धरती पर इस के निकट ही अनेक शहरों का निर्माण भी करो। यह सुन कर विश्वकर्मा ने विपुलाद्भुत चित्र विचित्र रीति से अत्यंत दृढ सुवर्ण दीवारों के साथ पुर का निर्माण किया। तत्पश्चात घनतर मेरु तुल्य कनक-रत्न जटित रथ का निर्माण किया। विश्वकर्मा के इस काम को देखकर ब्रह्म को बहुत संतोष हुआ। तब महान विखनस मुनि की ओर देखकर 'हे मुनींद्र! वैखानस आगम के अनुसार रथोत्सव के लिए अनुकूल सुनिश्चित लग्न देखने के लिए कहा।'

ब्रह्मोत्सव क्रम :

ब्रह्म की इन बातों को सुन कर विखनस ने इस रूप में कहा ''कन्या राशी में सूर्य के प्रवेश करने के मास में चित्राख्या नक्षत्र के दिन शास्त्र सम्मत सद्वजारोहण करके उत्ताराषाढ में रथोत्सव करके श्रवणा नक्षत्र के दिन ही तीर्थ स्नान कराना चाहिए।'' विखनस की इन बातों को सुन कर ब्रह्म ने शीघ्र ही रथोत्सव के लिए आवश्यक प्रयत्न करना शुरू किया। प्रीति से अपने दूतों को बुलाकर सकल देशाधिपति और देवताओं को रथोत्सव में भाग लेने के लिए निमंत्रण भेजा।

ब्रह्म के दूतों ने जा कर हरि के महोत्सव करने के प्रयत्न के बारे में सभी को बताया। वे सब अत्यंत संतोष के साथ उत्सव में भाग लेने के लिए हामी भरी। उन में द्रविड, कर्णाट, कुरु, कुकुर, केकय, कोसल, बर्बर, महाराष्ट्र, मगध, मालव, शूरसेन, सुधेष्ण, चोल, नेपाल, मलयाल, पांड्या, बंगाल, पांचाल, कोंकण, विदर्भ, टेंकण, सौराष्ट्र, सौवीर, शक, किरात, युगंध, आंध्र, विदेह, मत्स्य, पुलिंद, चेदि, त्रिगर्त, सिंहल, सिंधु, लाट, घोट, कांभोज, काश्मीरादि देशाधीश ने अति शीघ्र गति से रथ, गज, तुरंगादि वाहनों पर चढ कर सकुटुंब उत्सव में भाग लेने निकले। उन के आने के मार्ग में वहाँ जनों ने अन्न-धर्मशालाएँ, नीरागार, छायादार वितानों का निर्माण करके, अन्नोदक वस्त्र-भूषण, छत्र चामर, पादुका, वाहनादि का दान दिया। उन दानों को ग्रहण करके संतोष के साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जन, दीन भक्त सभी गोविंद नाम स्मरण करते पर्वत पर चढ कर वेंकटाचल पर पहुँच गए। वहाँ पर अनेक वास-स्थानों पर बसे। तदूपरांत स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके आदिवराह स्वामी के

दर्शन किए। उन्हें भेंट चढा कर बाद में श्रीनिवास के दर्शन किए। उन्हें भी अनेक वस्त्र, भूषण, धनराशियों को समर्पित किया। सभी श्रीनिवास की सेवा करने लगे। तब ब्रह्म ने सेनापति विश्वक्सेन को बुला कर इस रूप में कहा। ''हे सेनाधिपति! सुनो। हमारे जनक को यहाँ पर उत्सव करने का निर्णय लिया गया है। सारे कार्यों को करने के लिए सारे लोगों इकट्ठा करके सुरुचिपूर्ण ढंग से निरीक्षण करो।'' यह सुन कर विश्वक्सेन को संतोष हुआ। तब सेनाधिपति ने हरि को और ब्रह्म को नमस्कार करके रथ पर आरूढ होकर अपने परिजनों के साथ तिरुवीथियों में विचरण करते हुए सभी को अपने अपने काम सौंप दिए। फिर ब्रह्म के पास आकर, कर मोड कर वहाँ किए जानेवाले कार्यों का विवरण दिया। साथ ही सारे कार्यों के लिए अपने को आद्य बना लिया। आगम विहित मंत्रोच्चारण के साथ मत्स्य ग्रहण करके, पुण्याहवचन करके, मृत्तिका की पालिकाओं में नवधान्य डाल कर नवांकुर शुरू करवाया। इस रूप में अंकुरार्पण और नैवेद्यादि कृत्यों को संपन्न करके अगले दिन प्रातःकाल पुण्याहवचन, वास्तु होम, गरुड प्रतिष्ठा, गरुड होम, भेरी, ताल ताडन, कंकण धारण, अर्चकों को भेंट प्रदान करना आदि कार्यों को पूरा किया।

इस के अतिरिक्त हरि को, भूदेवी को, लक्ष्मी को नूतन वस्त्र, आभरणादि समर्पण करके, श्रृंगार करके, वज्र-रत्न खचित तिरुच्चि पर बिठा कर विविध मंगलवाद्यों को भू वायुमंडल में प्रतिध्वनित करते उन्हें बजाया गया। आगे फूलों की वर्षा करवाते ध्वज पट को आविष्कार किया। स्वामी के चक्र और सेनाधिपति आगे आगे चलने से मुनिगण, सनकासनादि योगियों की प्रशस्तियों के साथ छत्र चामर लेकर सकल देवतागण भक्ति से कीर्तन करते तिरुच्चि तिरुवीथियों में आगे बढी।

अतिवैभवपूर्ण ढंग से आनंदनिलय में परिक्रमा करते रमेश श्रीहरि को ले आने पर विखनस ने शास्त्रसहित रीति से चित्र का ध्वजारोहण करवाया। उस रात को अत्यंत वैभव के साथ नवकलशों की स्थापना करके अष्टदिक्पाल और हरि को वहाँ आह्वान करके परिपूर्ण दीक्षा के साथ अग्नि प्रतिष्ठा करके, सकल दैवत्य, पारमात्मिक होम किया गया। इस के अतिरिक्त वाहन, नक्षत्र, वरदिन, साप्ताहिक नित्य होम सब करके दिग्बलि से दिव्य चक्र को ले आकर नेत्र पर्व से भेरी, मृदंग, मंगलवाद्यों के घोषण से चारों दिक प्रतिध्वनित होते ब्रह्म रथ के साथ महाशेषवाहन पर श्रीनिवास को विराजित करके वाहन सेवा को निकाला गया। इस वाहन सेवा को अनेक सेवकों के साथ पूर्व रीति से विमान की परिक्रमा करवाते ब्रह्म श्रीहरि को स्वस्थान पर ले आये।

इस प्रकार नवकलश स्थापना, पालिकाराधना, नैवद्य, होम, चक्रबलि आदि नित्य प्रमुख कृत्यों को संपन्न करते रात को शेषवाहनोत्सव को, अगले दिन प्रातःकाल लघुशेषवाहनोत्सव को, उस रात को हंसवाहनोत्सह को, तीसरे दिन प्रातःकाल को सिंहवाहनोत्सव को, उस रात को पुष्प-मोती मालिक वाहनोत्सव को, चौथे दिन प्रातःकाल को सर्वभूपाल वाहनोत्सव को, उस रात को कल्पवृक्ष वाहनोत्सव को, पांचवें दिन प्रातःकाल को मोहिनी के वेश में श्रीहरि को नांदोलिकोत्सव को, उस रात को गरुडोत्सव को, छठे दिन प्रातःकाल को हनुमतोत्सव को, उस दिन शाम को वसंतोत्सव के बाद रात को गजवाहनोत्सव को, सातवें दिन प्रातःकाल को सूर्यप्रभावाहनोत्सव, उस रात को चंद्रप्रभावाहनोत्सव को, आठवें दिन प्रातःकाल को षोढष महादानादि विहित कृत्य संपन्न किया।

ब्रह्म के द्वारा रथोत्सव का निर्वहण :

उसके बाद रंग-बिरंगे वस्त्रों से सुसज्जित कनक रथ पर श्रीदेवी, भूदेवी समेत श्रीहरि को विराजित करके ब्रह्मादि देवताओं ने खींचते उत्सव किया है। इस में सकल दिक्पाल, गरुड, गंधर्व, किन्नेरगण, सिद्ध, विद्याधरों

की सेवा के साथ, देवताओं ने दुंदुभी बजाते महाद्भुत रूप में उत्सव किया है। रंभादि अप्सरसाओं ने पारिजात कुसुमों को उस ब्रह्म रथ पर बरसाकर नाचते गाते महोत्सव के साथ नेत्र पर्व से उत्सव मनाया। महोद्भुत ढंग से मनुष्यों ने वेंकटाद्री पर इस नेत्र पर्व उत्सव को देखा। वासुदेव के सुरचिर भक्तों ने जन इन उत्सवों को देखकर अपने जीवन को धन्य बनाया। तब स्मार्त भक्तों ने उपनिषदों को पठन करते तत्व ज्ञान को प्राप्त किया। तत्ववादियों ने श्रीहरि को श्रुतिसार के रूप में देवोत्तम के रूप में अनुभव किया। श्रीवैष्णवों ने प्रबंधानुसंधान के रूप में माधव भक्ति को प्रकट किया। बडे उत्साह के साथ कविगण ने हरि-कीर्तन किया। पंडितों के द्वारा श्रीहरि की प्रशंसा की गयी। ब्राह्मण स्त्रियों ने गीत गाकर हरि को घी की हारती उतारी। परम भागवत सद्भक्ति से कीर्तन करते उत्साह के साथ नाच रहे थे। भोग स्त्रियाँ हाथों को फिरोते नाच रही थी।

क्रम क्रम से वंदि मागाधि सूत बृंद पुरुषोत्तम की कीर्ति का गायन करते, सर पर कलश धारण करके कुछ भक्तजन नाच रहे थे। कुछ भक्त 'गोविंद' नामस्मरण कर रहे थे। इस रूप में सभी भक्ति परवश में नाचते गाते उत्सव में भाग ले रहे थे। तब कुछ सुहागिन स्त्रियाँ अट्टालिकाओं से उस स्वर्ण पर चावल और रत्न गिरा रही थीं।

इस प्रकार अनेक प्रकार से उस रथोत्सव में भाग लेते भक्ति परवश में विनोद करते, विनति करते उत्सव मनाते समय कनक कमल, सुगंध पुष्प, मोती मालाओं से सुशोभित मेरु समान रथ आनंदनिलय की परिक्रमा करके यथास्थान पर आकर खडा हो गया। तब श्री वेंकटेश्वर ने श्रीदेवी, भूदेवी समेत रथ से उतर कर ब्रह्म रुद्रादि देवताओं के समेत कल्याणमंटप में प्रवेश किया। उन्होंने नित्य होमादि किया। देवताओं ने उन की पूजा की। ध्वजारोहण से लेकर अब तक स्वामी ने भक्तों से समर्पित घी से बना अन्न, मुद्गान्न, तिलस्यान्न, मरीचान्न, माषान्न, गेहुओं से बना अन्न, पुलिहोर, गूडान्न, परमान्न, दध्यान्न, अतिरस, वडाए... मनोहर आदि विविध भक्ष्यों का भोजन किया। इससे वे अत्यंत तृप्त हुए। ब्रह्मादि भी इन का भोजन करके अत्यंत तृप्त हुए। तदूपरांत श्रीनिवास को एक पालकी में बिठाकर विमान की परिक्रमा करवायी गयी। तदुपरांत फिर कल्याणमंटप में ले आये। अगले नवमे दिन ब्रह्मादि नित्य नैमित्तिक कर्म पूरा करके श्रीहरि को श्रीदेवी, भूदेवी समेत मोतियों की पालकी में बिठाकर तिरुमाडावीथियों में शोभायात्रा निकाली। फिर उन्हें यथा स्थान ले आकर उन का हरिद्र चूर्णाभिषेक किया। बाद में चक्रत्ताल्वार को, हरि को, श्रीदेवी, भूदेवी को तिरुच्चि में विराजित करके विमान परिक्रमा के साथ स्वामिपुष्करिणी के तट पर ले आये। वहाँ उन को वराहस्वामी मंटप में रखकर पंचामृत के साथ स्नपन तिरुमंजन, चक्रस्नान, नैवेद्य समर्पण आदि को क्रम से संपन्न किया। तदुपरांत ब्रह्मादि ने अवभृतस्नान किया। तब श्रीनिवास ने उन्हें देख कर इस रूप में कहा।

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

शबरी

-डॉ.के.एम.भवानी

शबरी दत्ता फलासना राम।

भगवान के दर्शन की चाह से युग-युगों तक कठिन तप करनेवाले ऋषि-मुनियों के लिए भी उनका दर्शन पाना बहुत ही दुर्लभ है लेकिन दर्शन पाना ही नहीं, उसके समक्ष ही मोक्ष को पाई शबरी का जीवन धन्य है। अपनी निर्मल भक्ति और अटल विश्वास से यह दुर्लभ मोक्ष को पानेवाली महिला रत्न है शबरी।

शबरी मतंग मुनि की शिष्या है। मतंग के आश्रम में वह ऋषि-मुनियों के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने में मदद करती रहती है। तब वह महर्षि के उपदेशों और उनकी बातों से जान लेती है कि भगवान विष्णु ही श्रीराम का अवतार लेकर पृथ्वी पर अवतरित हुआ है। तब से उसके मन में श्रीराम के दर्शन करने की अभिलाषा जागृत होती है। वह निरंतर राम भक्ति में लीन होकर रहने लगती है। समय बीतते-बीतते कई साल गुजर जाते हैं। मतंग मुनि के कई शिष्य स्वर्ग सिधर जाते हैं। लेकिन शबरी ने दृढ़ संकल्प लिया कि वह श्रीराम के दर्शन करने के बाद ही स्वर्ग सिधारेगी। क्योंकि मतंग मुनि अपने जीवन के अंतिम समय में भी शबरी से यही कहते हैं कि- ''शबरी! इस पवित्र आश्रम में श्रीराम, लक्ष्मण सहित जरूर आएगें। तुम उनका अतिथि सत्कार करना। श्रीराम के दर्शन के बाद तुम उत्तम लोकों में जाओगी। इसलिए तुम तब तक यहीं इसी आश्रम में रहना।'' गुरु की बातों के अनुसार शबरी उसी आश्रम में रहकर श्रीराम का इंतजार करती रहती है।

जब श्रीराम अपने पिता के वचन निभाने के लिए चौदह साल वनवास करने पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन में आते हैं, तब दानव रावण माता सीता को अपहरण करके ले जाता है तब श्रीराम सीता का अन्वेषण करते हुए जंगलों में भटकते हुए कबंद नामक राक्षस की दोनों भुजाएँ काट डालता है तो वह कबंद शाप मुक्त होकर निज रूप धारण करके श्रीराम को सुग्रीव से मित्रता करने की सलाह देते हुए, शबरी के बारे में भी जानकारी देते हुए कहता है कि मतंग मुनि की शिष्या शबरी श्रीराम इंतजार में ही जीवित है।

कबंद के कहने के अनुसार राम-लक्ष्मण वनों में चलते हुए पंपा नदी के किनारे पर स्थित शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं। उन्हें देखते ही शबरी उन्हें पहचान कर आनंदाश्रु बरसाती हुई उनके पैरों पर पड़कर प्रणाम करती है। सदाचार के अनुसार उन दोनों को पाद्य, उदक का समर्पण करती है। तब श्रीराम शबरी से इस प्रकार पूछते है- ''हे तपसिन! यहाँ तुम्हारे तप के लिए कोई अड़चन तो नहीं है न? तुम तप की साधना में उन्नति कर रही हो न? काम-क्रोधों को वश में रख रही हो न? आहार लेने के विषय में काबू पा रही हो न? हे शबरी! तुम्हारे चंद्रायण व्रत पूरे हो गए? (चंद्रायण व्रत को भारतीय प्राचीन ऋषि,

मुनि आचरण करते थे। यह एक विशिष्ठ व्रत है। पापों की प्रायश्चित का कोई उपाय नहीं दिखने पर यह व्रत करते थे। चंद्र के बढ़ाव - घटाव के अनुसार आहार लेते हुए कठिन नियमों का पालन करते हुए व्रताचरण किया जाता था।) तुम्हें मानसिक शांति मिल रही है या नहीं? तुम्हें गुरु सेवा फल मिल रहा है या नहीं?''

राम की बातों का उत्तर देती हुई शबरी इस तरह कहती है- ''हे श्रीराम! आज तुम्हारे दर्शन से मेरे तप का फल मिल गया है। तुम्हारे दर्शन से ही मुझे गुरु सेवा फल भी मिला है। मेरा तप सफल हो गया है। हे पुरुष श्रेष्ठ श्रीराम! भगवान स्वरूप तुम्हारे पूजा करने के बाद मेरा जन्म धन्य हुआ है। मुझे जरूर स्वर्ग प्राप्ति होगी। जब तुम्हारी करुणा दृष्टि मुझ पर पडी है, तभी मैं पवित्र हो गई हूँ। ''शत्रु संहारक राम!'' तुम्हारे दर्शन भाग्य से मैं अब

अक्षय उत्तम लोकों को जा सकती हूँ। हे श्रीराम! जिन मुनि और ऋषियों की मैंने सेवा की, वे सब जब तुम चित्रकूट में थे, तभी विमानों पर चढ़कर स्वर्गलोक चले गए। मुझसे मेरे गुरु ने पहले ही कहा था कि शबरी इस पवित्र आश्रम को श्रीराम, लक्ष्मण के साथ आएँगे। तुम उन लोगों का अतिथि सत्कार अच्छे से करना। श्रीराम के दर्शन के बाद तुम उत्तम अक्षय लोकों में जाओगी। उनकी बातों के अनुसार मैं तुम्हारे इंतजार में हूँ। हे प्रभु! मैं तेरे लिए पंपा नदी के किनारे मिलनेवाले फलों को लायी हूँ। उन्हें स्वीकार करो।''

शबरी का अतिथि सत्कार स्वीकार करने के बाद श्रीराम ने शबरी से कहा कि ''शबरी! महात्मा दनु (शाप मुक्त कबंद) ने हमसे तुम्हारे बारे में कहा। मैंने सुना कि तुम्हारा यह तपोवन अनोखा है। अगर तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं उसे देखना चाहता हूँ।'' तब शबरी श्रीराम को पूरा आश्रम दिखाती हुई इस प्रकार कहती है ''श्रीराम! यह वन मतंग मुनि के नाम पर मतंग वन कहलाता है। यह वन हमेशा घने मेघों से आच्छादित जैसा दिखता है। यहाँ पक्षी और मृग स्नेह भाव से मिलजुल कर रहते हैं। हमारे परम पवित्र गुरुदेव यहीं पर वेदोक्त रीति से कई यज्ञ किए। उनके तप प्रभाव से आज इतने समय के बाद भी ये सब यज्ञ वेदिकाएँ असीमित कांति से सारी दिशाओं में चमक रही हैं। यहाँ यह जो सरोवर है, इसका उद्भव ऐसा हुआ कि मेरे गुरु उपवासों से कमजोर और वृद्ध बनने के बाद नहाने के लिए स्वयं नदी तट पर जा न सके, तब सात समुंदरों के जल खुद आकर यहाँ सरोवर बन गए। हमारे गुरु

मतंग इसी सरोवर में स्नान कर, यहीं अपने गीले कपड़े सुखाते थे। उनके बिना भी आज यह सारा प्रदेश गीला ही है। राम! वे देखो! काले कमलों और अन्य फूलों से उन्होंने जो मालाएँ बनाए थे, वे आज भी नहीं मुरझे हैं। अब आप सब कुछ देखे और जान भी गए। इसलिए मुझे अनुमति देने से मैं अपना देह त्याग दूँगी।''

श्रीराम और लक्ष्मण शबरी के आतिथ्य से बहुत प्रसन्न हो गए। उस तपोवन के महत्व से चकित हो गए। तब श्रीराम ने शबरी को अनुमति देते हुए कहा कि ''हे शबरी! तुम अपनी भक्ति से मुझे सम्मानित किया। मेरी पूजा की। अब तुम स्वेच्छा से दिव्यलोकों में प्रवेश करो।'' राम अनुमति देती ही शबरी अग्नि में प्रवेश कर ली। उसी क्षण वह दिव्य मालाओं से, दिव्य वस्त्राभरणों से अलंकृत होकर जहाँ उनके गुरु और अन्य महर्षि लोग चले गए, उन्हीं दिव्य लोकों में चली गई।

जैसे दुनिया में प्रचलित है कि शबरी श्रीराम को जूठे बेर खिलाई थी, वह वाल्मीकि रामायण में नहीं वर्णित है। महान गुरु मतंग और ऋषि-मुनियों की सेवा में लीन शबरी कभी ऐसा कर सकती है? बिल्कुल नहीं लगता है। श्रीराम के आगमन की इंतजार में वह रोज़ आश्रम को स्वच्छ और साफ रखकर, वन से फलों को लाकर इंतजार करती रही क्योंकि उसे दृढ़ विश्वास था कि श्रीराम जरूर उसके आश्रम में आएगा। लेकिन कब? यह उसे नहीं पता था। इसलिए वह हर रोज, हर पल राम के सत्कार के लिए तैयार ही रही। इसीलिए श्रीराम के दर्शन होते ही उसका इंतजार और जन्म की सफलता समाप्त होकर वह उसी समय भगवान के समक्ष उन्हींकी अनुमति से दिव्यलोक चली गई। धन्य हो गई। इस तरह शबरी अपनी अचंचल भक्ति, अटल विश्वास, गुरु सेवा और सत्सांगत्य का फल प्राप्त करनेवाली भक्तिन का उदाहरण बन गई।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

भगवान को याद कर राजा तोंडमान रात को सोये। भगवान श्रीनिवास ने स्वप्न में उन्हें दर्शन दिया और उन्हें एक आसान सुरंग के रास्ते से वेंकटाचल पहाड पर ले गये। वह उनके राजमहल से सीधा रास्ता था। पहाड पर जाने के लिए सामान्यतया मिलनेवाला रास्ता टेढा-मेढा और ऊबड-खाबड था। रास्ते भर में पत्ते झडे रहते थे। अगले दिन सुबह ही राजा तोंडमान घोडे पर अधिरोहित होकर डालियों और पत्तों से सूचित रास्ते से गुफा मार्ग तक पहुँचे। वहाँ गुफा के आस-पास एक छोटे नगर को बसाया। उसे अपने महल से मिलाया। वहाँ एक प्राकार का भी निर्माण कराया। वह एक रहस्य स्थान था। वहाँ रहते हुए राजा ने योजना बद्ध रूप में कार्य करने का निर्णय लिया। जब आस-पास के वृक्षों को कटवाने तैयार हो रहे थे, तब भगवान ने राजा के सामने प्रत्यक्ष होकर कहा- ''हे तोंडमान! इस इमली के पेड और चंपक वृक्ष दोनों को मत कटवाना। इमली का पेड मुझे और चंपकवृक्ष लक्ष्मी के लिए प्रिय हैं। प्राकार का निर्माण गोपुरद्वार के साथ बनवाओ। गर्भ आलय जो मेरा निवास स्थान है, उस के ऊपर विमान का निर्माण करवाना। तुम्हारे ही वंशज नारायण उसे सुवर्ण मण्डित करेगा। वह उसका काम होगा।''

भगवान की सूचनाओं के अनुरूप तोंडमान ने प्राकार, मुखद्वार और एक शिखर बुर्ज बनवाया। नित्य पूजा की व्यवस्था की। सुरंग मार्ग से वे नित्य मंदिर जाते थे। पूजाएँ संपन्न करते थे। इस प्रकार उन्होंने धर्माश्रित विधि से शासन किया। समस्त सुखों को भी पाया। भक्ति उनके लिए सर्वोपरि रही।

वीर शर्मा की उत्तर की तीर्थयात्रा

(वरा. पु. भा. 2, अ. 10, श्लो. 50-78)

तोंडमान सुचारु रूप से शासन चला रहे थे। उस समय दक्षिण राज्य से अपनी पत्नी के साथ गंगा की ओर तीर्थयात्रा में एक ब्राह्मण निकला। उसकी पत्नी उस समय गर्भवती थी। कुछ दूर आयी। लेकिन आगे चलने में उसको कष्ट होने लगा। उस समय वे दंपति तोंडमान के राज्य में पहुँचे। ब्राह्मण ने सोचा कि धर्मात्मा राजा के पास अपनी पत्नी सुरक्षित रहेगी। राजा के पास पहुँचकर सहायता की याचना की। राजा ने उसकी प्रार्थना मानी। राजा के पास उनकी रक्षा में पत्नी को छोडकर ब्राह्मण तीर्थयात्रा में आगे चला। तोंडमान ने गर्भवती स्त्री को अंतःपुर के एक कोने के

रानीवास के पास रखा। वहाँ तक कोई जा नहीं सकता। छः महीने के लिए आवश्यक आहार पदार्थ भी उसके लिए रखवाया। उसकी देखभाल के लिए नौकरानियों को भी रखा। कुछ समय में ही उसके बारे में सब कुछ भूल गये।

ब्राह्मण ने अपनी तीर्थयात्रा पूरी की। उसने तीर्थयात्रा में पूरे दो वर्ष लगा दिये। वापस लौटने के बाद ब्राह्मण राजा के पास पहुँचकर पत्नी के बारे में पूछा। उसे देखकर ही राजा को ब्राह्मण की पत्नी की याद आयी। जब ब्राह्मण छोडकर गया, वह उस समय गर्भवती भी थी। ब्राह्मण को कुछ जवाब दिये बिना ब्राह्मण स्त्री की ओर ध्यान दिया। उसकी सुख-सुविधा की पूछ-ताछ की। राजा स्वयं अंतःपुर की ओर गये। ब्राह्मण के लिए उचित रूप से रहने की व्यवस्था करायी। अंतःपुर में पूछने पर राजा को पता चला कि ब्राह्मण स्त्री को केवल छः महीनों के लिए ही खान-पान की व्यवस्था की गई थी। बाद में उसकी सूचना किसी ने राजा को नहीं दी। भूख से तडपती हुई वह मर गयी। राजा तोंडमान घबरा गये। वे गुफा मार्ग से नृसिंह भगवान के पास पहुँचे। नृसिंह ने उनको वेंकटेश्वर के पास जाने की सलाह दी। राजा तोंडमान श्रीनिवास भगवान की सन्निधि में पहुँच गये। उनके सामने प्रणमित हुए। अपनी भूल के कारण ब्राह्मण स्त्री की हुई मृत्यु के बारे में उनसे निवेदन किया। श्रीनिवास ने राजा को तसल्ली दी और आदेश दिया- ''हे राजा! उस ब्राह्मण स्त्री के शव को अच्छी तरह सजाकर एक पालकी में बिठाकर अस्थितीर्थ पहुँचना। अस्थितीर्थ मेरे मंदिर की पूर्व दिशा में है। वहाँ ले जाकर उस तीर्थ में उनका स्नान करवाओ। वह पुनर्जीवित होगी। उसके बाद उसे तुम उन्हें ब्राह्मण को सौंप दो।''

तुरंत राजा अन्तःपुर लौटे। पालकी मंगायी। अपनी रानियों के साथ, पालकी में ब्राह्मण स्त्री के शव को रखकर अस्थितीर्थ पहुँचे। सबने मिलकर अस्थितीर्थ में स्नान किया। ब्राह्मण स्त्री के शव को भी नहलवाया। एक डुबकी के साथ ब्राह्मण स्त्री जीवित हो गयी। तीर्थ के जल से मुस्कुराती बाहर आयी। राजा ने ब्राह्मण स्त्री को ब्राह्मण के हाथों में सौंपा। ब्राह्मण दंपति संतोषपूर्वक राजा से आज्ञा लेकर स्वदेश लौटे। उन्हें राजा ने धन भी दिया।

इसके बाद श्रीनिवास भगवान ने तोंडमान से कहा- ''राजा तुमको असमय - कुसमय मेरे मंदिर में आना नहीं चाहिए। नैवेद्य के समय ही आपको मेरे मंदिर में आना है। उसी समय मेरी पूजा सुवर्ण कमलों से करनी है। तुम्हारी सारी इच्छाएँ अवश्य पूरी होंगी।'' तब से राजा तोंडमान

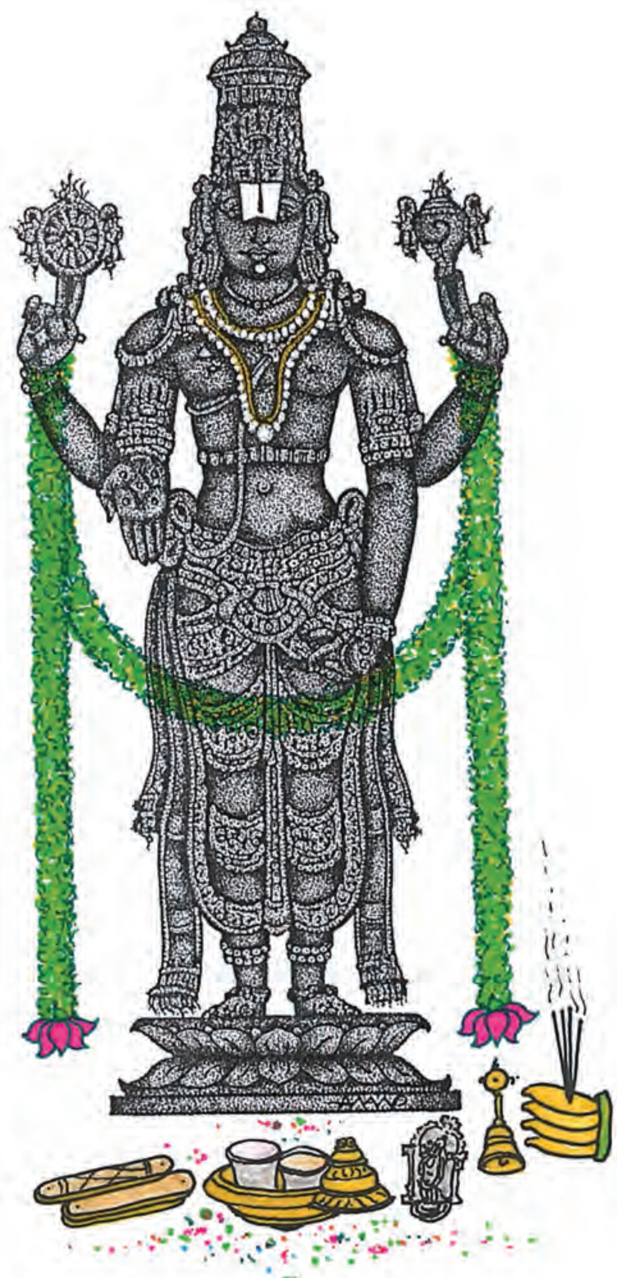

भगवान के आदेशानुसार पूजा करने लगे। (वरा. पु. भा.2, अ.10, श्लो. 79-102)

एक दिन राजा ने देखा कि मिट्टी के बने तुलसी के पत्ते उनके सुवर्ण कमलों के साथ भगवान के पाद पद्मों पर थे। राजा कुछ समझ नहीं पाये। ये मिट्टी से बने तुलसी के पत्ते कहाँ से आये? राजा के मन में शंका उत्पन्न हो गयी। तब भगवान ने कहा- ''हे राजा! मेरा भक्त और एक है। वह कुम्हार है। वह तुम्हारे राज्य के ही कुर्वा गाँव में रहता है। वह मुझे अपने घर में प्रतिष्ठित कर मिट्टी के तुलसी पत्तों से पूजता है। उसकी अर्चना मैं स्वीकार करता हूँ।'' राजा उस कुम्हार को देखने उसके घर पहुँचे।

उस कुम्हार का नाम भीम था। राजा को अपने घर पर देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया। राजा को नमस्कार किया। आदर के साथ अपने यहाँ उचित स्थान पर बिठाया। तब तोंडमान ने उससे पूछा कि ''तुम भगवान की पूजा किस प्रकार कर रहे हो? कुम्हार ने उत्तर दिया यथा- ''मैं कुम्हार हूँ, मैं यह नहीं जानता कि अर्चना क्या होती है। आप से किसने कहा कि मैं पूजा करता हूँ!'' तोंडमान ने कहा- ''स्वयं श्रीनिवास भगवान ने तुम्हारी पूजा की प्रशंसा की है। इस कारण मैं तुम्हारे पूजा-विधान जानने के लिए ही तुम्हारे पास आया हूँ।''

तब कुम्हार ने स्मरण किया। भगवान ने उससे पहले कहा था कि ''जब तुम्हारी पूजा की बात राजा तोंडमान को मिलेगी और वे तुम्हारे यहाँ पहुँचेंगे तब तुम्हें मोक्ष मिलेगा।'' यह भगवान वेंकटेश्वर का वरदान था। इतने में कुम्हार ने देखा कि भगवान उन्हें तारने के लिए विमान में आ रहे हैं। कुम्हार भीम अपनी पत्नी के साथ विमान में बैठ गया। विष्णु पदों(परमपद, वैकुंठ) में स्थान पाया। राजा के देखते-देखते विष्णु के साथ उनके लोक में पहुँच गया।

तोंडमान इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर स्तंभित हो गये। अपनी राजधानी में पहुँचे। अपने पुत्र श्रीनिवास को राज्य सिंहासन पर बिठाया। अकेले ही तपस्या के लिए एक निर्मल जगह पर पहुँच गये। तपस्या की। भगवान ने श्रीदेवी और भूदेवी समेत गरुड पर आरूढ़ होकर प्रत्यक्ष होकर राजा से पूछा कि उन्हें किस प्रकार का वर चाहिए। तब राजा ने कहा- ''हे भगवान! मैं आपकी स्वर्ग-लोक कृपा से संतुष्ट हूँ। मुझे पुनर्जन्म राहित्य प्रदान कीजिए। मैं आपके स्वर्ग-लोक में कुछ स्थान मात्र पाना चाहता हूँ और कुछ नहीं।'' तुरंत एक विमान वहाँ पहुँचा। तोंडमान उसमें बैठे और विमान वैकुंठ की ओर चला।

।। 9वाँ अध्याय समाप्त ।।

क्रमशः

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनाएं)

मिथ्याडंबर

हीन जाति वानि केच्चु वैष्णव मिच्चि
द्विजुल कन्न दोड्ड तीरटंद्रु
कल्लु कडव गडिगि गंग निंचिनयट्लु?
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।22।।

विशिष्टाद्वैती (वैष्णव) लोग चमार डोम जैसे नीच जाति वालों को भी दीक्षित कर अपने समाज में मिला लेते हैं। और उन्हें ब्राह्मणों से भी बढ़ कर मानते हैं। दीक्षा देने मात्र से मनुष्य की नीचता दूर नहीं हो जाती है। मदिरा का घड़ा धोकर उसमें पवित्र गंगा-जल भरना जितना अनुचित है, मानसिक परिणति के अभाव में शुद्धि का यह विधान भी उतना ही अनुचित है। (वेमना के अनुसार गुणवान चमार गुणहीन ब्राह्मण से श्रेष्ठ है। केवल दीक्षित होने से मनुष्य में पूज्यता नहीं आती।)

ऋषि-मुनि

ऋषि गर्गाचार्य

- डॉ.जी.सुजाता

सृष्टिकर्ता भगवान विष्णु समुद्र पर लक्ष्मी सहित शेष की शैय्या पर योगनिद्रा में मग्न थे। सोये हुए भगवान की नाभि से बड़ा कमल उत्पन्न हुआ। उस कमल के मध्य में से वेद वेदांगों के रचयिता ब्रह्म उत्पन्न हुए। भगवान विष्णुजी ने उनसे बारंबार जगत की सृष्टि रचने के लिए आग्रह किया। ब्रह्माजी ने संपूर्ण जगत को रच कर यज्ञ सिद्धि के लिए पाप रहित ब्राह्मण को उत्पन्न किया। साथ ही क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की रचना की। इस प्रकार सृष्टिकर्ता ब्रह्म के पुत्र अंगिरा ऋषि हुए और अंगिरा के पुत्र अंगिरस हुए जो कि बृहस्पति के नाम से प्रसिद्ध थे। बृहस्पति सब देवताओं के पुरोहित थे। अब जो बृहस्पति से आगे वंश चला वह सब गुरु पुरोहित कहलाये और बृहस्पति जी का दूसरा नाम गुरु होने से उनके वंशजों को गुरु की उपाधि प्राप्त हुई। इसी प्रकार बृहस्पति जी के भरद्वाज हुए, भरद्वाज के भुवमन्यु और भुवमन्यु के तेजस्वी पुत्र गर्ग उत्पन्न हुए। उनकी माता विजया थी। गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम गार्ग्य और पुत्री का नाम गार्गी था।

ऋषि गर्ग अंगिरस गोत्र में उत्पन्न एक परम श्रेष्ठ मंत्र द्रष्टा ऋषि थे। ऋग्वेद के छठे मंडल के 47वें सूक्त के मंत्र द्रष्टा ऋषि माने जाते हैं।

श्री गर्ग ऋषि जी विद्या और ज्ञान में श्रेष्ठ होने से गर्गाचार्य नाम से विख्यात हुए। ऋषि गर्ग या गर्गाचार्य जी ज्योतिष शास्त्र के महान आचार्य व गणितज्ञ थे। अखिल ब्रह्मांड से लेकर सूक्ष्म पिंड पर्यंत ज्योतिष महाविज्ञान का क्षेत्र है। अनादि काल से शाश्वत चली आ रही इस महा विज्ञान का गणित भी शाश्वत सत्य है। संसार की समस्त विद्याएँ इसमें समाई हुई है। जिन भारतीय दिव्य ऋषियों ने वेद ज्ञान अपने तपोबल से प्राप्त किया जिसमें ऋषि गर्ग का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के प्रधान प्रवर्तक भगवान गर्गाचार्य जी रहे है समस्त ऋषियों में चारों उपाधि से, क्रमशः महर्षि-आचार्य-मुनि-गुरु आदि से विभूषित हुए।

ज्योतिष शास्त्र में ऋषि गर्ग ने महाग्रंथ 'श्री गर्ग होरा' की रचना की थी जो ज्योतिष का महान शास्त्र है। इस प्रकार ऋषि गर्गाचार्य अठारह वेदांग ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों में गुरु सिद्ध हुए। भगवान गर्गाचार्य जी न केवल ज्योतिष शास्त्र के आचार्य थे, बल्कि चार वेद, अठारह पुराण, एक सौ आठ उपनिषद सहित षट् वेदांग के भी पूर्णतः आचार्य रहे हैं।

ऋषि गर्ग परम शिवभक्त थे। भगवान शिव ने स्वयं इन्हें अपना परम शिष्य बताया है। इन्होंने सरस्वती के तट पर मानस यज्ञ कर भगवान शिव

को प्रसन्न कर चौंसठ कलाओं एवं ज्योतिष का अनुपम ज्ञान प्राप्त किया था। इनका प्रसिद्ध आश्रम कुरुक्षेत्र में देवनदी सरस्वती के तट पर निर्दिष्ट है। ऐसी प्रसिद्धी है कि इन्होंने यहीं ज्ञान प्राप्त किया और ज्योतिषशास्त्र के ग्रंथों की रचना की।

भगवान शंकर व देवी पार्वती जी का विवाह संस्कार महर्षि गर्गाचार्य जी के आचार्यत्व में ही सम्पन्न हुआ था। गर्ग ऋषि भगवान श्रीकृष्ण के कुल यदुवंशी के राजगुरु थे। भगवान कृष्ण व बलराम की नामकरण संस्कार ऋषि गर्गाचार्य जी ने ही संपन्न करवाया था। इन्होंने ही भगवान श्रीकृष्ण का नामकरण संस्कार व भविष्य वर्णन कर विभिन्न लीलाओं का भविष्यवाणी की थी। इन्होंने नंद परिवार वासुदेव पर कंस का संकट आने पर स्वयं नंदबाबा के महल जाकर भविष्य वर्णन बताया था। गर्गाचार्य ऋषि से भगवान श्रीकृष्ण ने शिक्षा ग्रहण करके संपूर्ण प्रजा का पालन किया।

इन्होंने श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित संस्कृत में गर्ग संहिता जैसा परम पवित्र ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा था जो सर्व लोकप्रिय है। कृष्ण भगवान पर इनके द्वारा रचित ''गर्ग संहिता'' न केवल ज्योतिष पर आधारित शास्त्र है, बल्कि इसमें भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का भी वर्णन किया गया है। गर्ग संहिता में श्रीकृष्ण चरित्र का विस्तार से निरूपण किया गया। इसमें राधाजी की माधुर्य-भाव वाली लीलाओं का वर्णन है। श्रीमद्भगद्गीता में जो कुछ सूत्ररूप से कहा गया है, गर्ग संहिता में उसी का बखान किया गया है। अतः यह भागवतोक्त श्रीकृष्णलीला का महाभाष्य है।

गर्ग संहिता के निम्नलिखित खण्ड (अध्याय) हैं -

गोलोक खण्ड, वृन्दावन खण्ड, गिरिराज खण्ड, माधुर्य खण्ड, मथुरा खण्ड, द्वारका खण्ड, विश्वजीत खण्ड, बलभद्र खण्ड, विज्ञान खण्ड, अश्वमेध खण्ड।

श्रीकृष्ण की मधुरलीला की रचना हुई दिव्य रस के द्वारा उस रस का रास में प्रकाश हुआ है। श्रीमद्भागवत में उस रास के केवल एक बार का वर्णन पाँच अध्यायों में किया गया है; जबकि इस गर्ग संहिता में वृंदावन में, अश्व खण्ड के प्रभाव सम्मिलन के समय और उसी अश्वमेध खण्ड के दिग्विजय के अनंतर लौटते समय तीन बार कई अध्यायों में बड़ा सुंदर वर्णन है। इसके माधुर्य खंड में विभिन्न गोपियों के पूर्वजन्मों का बड़ा ही सुंदर वर्णन है और भी बहुत-सी नयी कथाएँ हैं। यह संहिता भक्तों के लिये परम आदरणीय है; क्योंकि इसमें श्रीमद्भागवत के गूढ़ तत्त्वों का स्पष्ट रूप में उल्लेख है।

इसी प्रकार गर्ग ऋषि ज्योतिष शास्त्र के साथ ही कई कुलों के कुल गुरु रहे है अपनी तपोबल से सबको मार्गदर्शन दिया।

ऋषि गर्गाचार्य जयंती

प्रतिवर्ष अनवरत गर्ग ऋषि की भादवा सुदी पंचमी को देशभर में जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि ऋषि गर्गाचार्य जी के उद्भव दिवस के रूप में विख्यात है। इसी दिन को ऋषि पंचमी पर्व भी मनाया जाता है। ऋषि गर्गाचार्य जी के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करने का यह एक पवित्र दिन बताया गया है।

भारतवर्ष ऋषि-मुनियों का स्थल रहा है। ऋषि-मुनियों के द्वारा रचित वेद, पुराण आदि ग्रंथ सदैव समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहे हैं। ऋषि-मुनियों द्वारा किये गए तप, जप, ज्ञान, विवेक, तेज आदि कृत्यों का यह मानव समाज सदैव ऋणी रहेगा। उनके प्रति श्रद्धा व निष्ठा भाव के रूप में ऋषि पंचमी मनाई जाती है।

तुलसी माहात्म्यम् आस्थानम्

'कटक मास शुक्ल पक्ष द्वादशी के दिन' यह उत्सव संपन्न होता है। इस दिन तिरुपति में विराजित श्री गोविंदराज स्वामीजी को प्रातःकाल पूजाराधना संपूर्ण होने के बाद, श्री गोविंदराज स्वामीजी गरुड वाहन पर आरूढ़ होकर माडावीथियों में जुलूस निकालते है। फिर वापस मंदिर को आने के बाद महाद्वार जय-विजय के पास भगवान जी को उपस्थित कर, इस आस्थान कार्यक्रम को संपन्न करते हैं। इस आस्थान कार्यक्रम में 'तुलसी माहात्म्यम्' पुराण को पठन करते हैं। तदनंतर आस्थान पूर्ति होने के बाद सन्निधि को भगवान जी पधारते हैं। साधारण दिनों में वैदिक कार्यक्रम चालू होते है। इस वर्ष तुलसी माहात्म्यम् दि.30.07.2023 को संपन्न होते है। इस संदर्भ में सप्तगिरि पाठकों के लिए 'तुलसी अष्ठोत्तर शतनामावली' स्तोत्र गान करने के लिए दी जा रही है। तुलसी अष्ठोत्तर पढ़ कर तुलसी माँ का आशीष प्राप्त कर लें।

श्री तुलसी अष्टोत्तर शतनामावली

ॐ श्री तुलस्यै नमः।
ॐ पावन्यै नमः।
ॐ पूज्यायै नमः।
ॐ बृंदावननिवासिन्यै नमः।
ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः।
ॐ निर्मलायै नमः।
ॐ सर्वपूजितायै नमः।
ॐ सत्यै नमः।
ॐ पतिव्रतायै नमः।
ॐ बृंदायै नमः। 10
ॐ क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः।
ॐ कृष्णवर्णायै नमः।
ॐ रोगहंत्र्यै नमः।
ॐ त्रिपर्णायै नमः।
ॐ सर्वकामदायै नमः।
ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः।
ॐ सत्यशुद्धायै नमः।
ॐ सुदत्यै नमः।
ॐ भूमिपावन्यै नमः।
ॐ हरिध्यानैकनिरतायै नमः। 20
ॐ हरिपादकृतालयायै नमः।
ॐ पवित्रायै नमः।
ॐ श्रीरूपिण्यै नमः।
ॐ धन्यायै नमः।
ॐ सुगंधिन्यै नमः।
ॐ अमृतोद्भवायै नमः।
ॐ सुरूपायै नमः।
ॐ आरोग्यदात्र्यै नमः।
ॐ तुष्ट्यै नमः।
ॐ शक्तित्रयरूपिण्यै नमः। 30
ॐ देव्यै नमः।
ॐ देवर्षिसंस्तुतायै नमः।
ॐ कांतायै नमः।
ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः।
ॐ भूतभेतालभीतिघ्नायै नमः।
ॐ महापातकनाशिन्यै नमः।
ॐ मनोरथप्रदायै नमः।
ॐ मेधायै नमः।
ॐ कांत्यै नमः।
ॐ विजयदायिन्यै नमः। 40
ॐ शंखचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः।
ॐ कामरूपिण्यै नमः।
ॐ अपवर्गप्रदायै नमः।
ॐ श्यामायै नमः।
ॐ कृशमध्यायै नमः।
ॐ सुकेशिन्यै नमः।
ॐ वैकुंठवासिन्यै नमः।
ॐ नंदायै नमः।
ॐ बिंबोष्ठ्यै नमः।
ॐ कोकिलस्वरायै नमः। 50
ॐ कपिलानिमग्नगासंभवायै नमः।
ॐ आयुष्यदायिन्यै नमः।
ॐ वररूपायै नमः।
ॐ दुःखनाशिन्यै नमः।
ॐ अविकारायै नमः।
ॐ चतुर्भुजायै नमः।
ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः।
ॐ शांतायै नमः।
ॐ धांतायै नमः।
ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः। 60

ॐ श्रियै नमः।
ॐ विष्णुमालिकायै नमः।
ॐ तुष्ट्यै नमः।
ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः।
ॐ महाशक्त्यै नमः।
ॐ महामायायै नमः।
ॐ लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः।
ॐ सुमंगलायै नमः।
ॐ आर्चनप्रीतायै नमः।
ॐ सौमंगल्यविवर्धनायै नमः। 70
ॐ चातुर्मासोत्सवाराध्यायै नमः।
ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः।
ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः।
ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः।
ॐ गोप्यै नमः।
ॐ रतिप्रदायै नमः।
ॐ निर्गुणायै नमः।
ॐ पार्वतीप्रियायै नमः।
ॐ अपमृत्युहरायै नमः।
ॐ राधाप्रियायै नमः। 80
ॐ मृगविलोचनायै नमः।
ॐ अम्लानायै नमः।
ॐ हंसगमनायै नमः।
ॐ कमलासनवंदितायै नमः।
ॐ भूलोकवासिन्यै नमः।
ॐ शुद्धायै नमः।
ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः।
ॐ सीतापूज्यायै नमः।
ॐ राममनःप्रियानंदनसंस्थितायै नमः।
ॐ सर्वतीर्थमयायै नमः। 90
ॐ मुक्तायै नमः।
ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः।
ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः।
ॐ वैष्णव्यै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।
ॐ नारायण्यै नमः।
ॐ संततिदायै नमः।
ॐ मूलमृदे नमः।
ॐ पावन्यै नमः।
ॐ अशोकवनिकासंस्थासीताध्यातायै नमः। 100
ॐ निराश्रयायै नमः।
ॐ गोमतीसरयूतीरसंस्थायै नमः।
ॐ कुटिलालकायै नमः।
ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्नायै नमः।
ॐ दानतोयायै नमः।
ॐ विशुद्धिदायै नमः।
ॐ श्रुतिधारणसुव्रतायै नमः।
ॐ शुभायै नमः।
ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः। 108

इति श्री तुलसी
अष्टोत्तर
शतनामावली
पूजां समर्पयामी।

दि.21.05.2023 से दि.25.05.2023 तक तिरुपति में स्थित श्री गोविंदराज स्वामीजी के मंदिर में महासंप्रोक्षण कार्यक्रम को ति.ति.दे. ने आयोजित किया। इस संदर्भ में पुण्याहवचन, विष्वक्सेन आराधन आदि वैदिक कार्यक्रमों को आयोजित किया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.17.05.2023 से दि.25.05.2023 तक आं.प्र. राज्य में अल्लूरि सीतारामराजु जिला, रंपचोडवरम् प्रांत में ति.ति.दे. के द्वारा नूतन निर्मित श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर में विग्रह प्रतिष्ठापन, महासंप्रोक्षण कार्यक्रम को आयोजित किया गया। इस संदर्भ में क्षीराधिवास, श्रीनिवास कल्याणम् और अन्य वैदिक पूजाक्रतुओं को निर्वहण किया है। इस संदर्भ में धर्मपत्नी सहित ति.ति.दे. के न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. के जे.ई.ओ., और आदि अन्य उच्च पधादिकारीगण ने भाग लिया।

श्री प्रपन्नामृतम्

(43वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

कृमिकण्ठ चोलराज की उत्पत्ति का कारण

जिस प्रकार पुत्र के सुयोग्य होने पर पिता अपना समस्त कार्यभार पुत्र को सौंपकर सांसारिक कार्यों से निवृत्त हो जाता है, उसी प्रकार भगवान श्रीरंगनाथ अपनी दोनों विभूतियों का कार्य यतिराज श्री रामानुजाचार्य को सौंपकर निश्चिन्त हो गये, और जगन्माता श्रीलक्ष्मीजी के समस्त मनोरथों को पूर्ण करते हुये शेष-शय्या पर सुखपूर्वक शयन करने लगे।

लोकरक्षा के लिये यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने भगवान के आदेश से अत्यन्त गोपनीय, मुक्तिप्रद द्वयमंत्र का समस्त लोगों को उपदेश देना प्रारंभ कर दिया। उपरोक्त मंत्र देकर और संप्रदाय सिद्धांत का रहस्य प्रदान करके आपने चौहत्तर सुयोग्य शिष्य बनाये, जो परम ज्ञानी, विद्वान और महातेजस्वी 74 पीठाधीश्वरों के नाम से प्रख्यात हैं।

यतिराज ने स्वयं और उनके आदेश से उक्त 74 पीठाधीश्वरों द्वारा अहर्निश श्रीवैष्णवतामय वातावरण दृष्टिगोचर होने लग गया और असंख्य लोगों ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणकमलों का आश्रय ग्रहण कर मोक्ष-मार्ग को अपनाया।

भगवान श्रीमन्नारायण द्वारा प्रवर्तित परम वैदिक वेदान्तदर्शन की स्थापना करने वाले यतिराज श्री रामानुजाचार्य के शुभ प्रयास से यह सारा भारत श्रीवैष्णवमय हो गया। सर्वत्र श्रीवैष्णव-धर्म का प्रचार हो जाने से तत्कालीन सभी धर्मनिष्ठ उभय वेदान्त पारंगत ब्राह्मणों ने भगवत् कैंकर्य की बुद्धि से समस्त फल कामनाओं का परित्याग करके भगवान के दिव्य वैकुंठधाम की प्राप्ति की कामना की। इसी प्रकार क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों तथा अन्य जनों ने भी अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुये यतिराज श्री रामानुजाचार्य के साथ संबंध होने के कारण नित्यधाम वैकुंठ लोक प्राप्त करने का निश्चय किया। ये सभी श्रीवैष्णव अपने-अपने कुलोत्पन्न सभी पितरों का उद्धार करते हुए उनकी मुक्ति के हेतु बने। जिस प्रकार प्राचीन समय में राजा रुक्मांगद के शासन काल में एकादशी व्रत के प्रभाव से सभी लोग मुक्त होकर श्वेतद्वीप नामक वैकुंठ में चले गये थे। उसी प्रकार

इस समय प्रपत्ति धर्म में संलग्न रहने वाले सभी विवेकीजन तथा श्रेष्ठ श्रीवैष्णवजनों ने यतिराज के संबंध मात्र से अनायास ही शीघ्रता पूर्वक अपने करोड़ों पीढ़ियों पूर्व के पितरों का साथ विरजा नदी के उस पार पर स्थित परम दुर्लभ वैकुंठ को प्राप्त करने की योग्यता संपादन की।

जगद्गुरु यतिराज के सदुपदेशों से सभी लोग वैकुंठ को जाने लगे। इससे नरकों में कष्ट भोगने वाले लोग भी अपनी-अपनी संतान के यतिराज के चरणाश्रित हो जाने पर वैकुंठ में जाने लगे इस प्रकार श्री शठकोप सूरि द्वारा विरचित सहस्रगीति की ''पोलिहा'' नामक सूक्ति सार्थक हो गयी। जिसका तात्पर्य है कि- ''किसी समय में कोई ऐसे महापुरुष भूमंडल पर अवतार लेंगे, जिनके पुण्य कर्मों के ही कारण कलियुग का दोष नष्ट हो जायेगा।'' अब सभी लोग यह स्पष्ट रूप से जान गये कि उपर्युक्त सहस्रगीति में वर्णित महापुरुष यतिराज श्री रामानुजाचार्य ही हैं।

श्वेतद्वीप के समान ही भारतवर्ष की पुण्यमयी स्थिति देखकर यमराज घबराया और पितामह ब्रह्माजी की शरण में जाकर बोला- ''हे पितामह! कर्मभूमि मृत्युलोक में यतिराज श्री रामानुजाचार्य के द्वारा शरणागति धर्म में दीक्षित होकर वहाँ के सभी लोग पतित से पावन बन गये है और अब निरंतर वैकुंठ लोक को जा रहे है। नरकों के पुराने पापी भी उनके संबंध मात्र से मुक्त हो गये हैं। इससे सभी नरक रिक्त हो रहे है और मेरा दंड विधान शिथिल पड़ रहा है। अब मेरे पास पापियों को दंड देने का कोई काम नहीं रहा। क्योंकि यतिराज के संबंध से सभी जन निष्पाप होते जा रहे है।''

यह सुनते ही पितामह ब्रह्माजी तत्काल सभी देवताओं को साथ लेकर श्रीरंगम आये, जहाँ पर देवाधिदेव भगवान श्रीरंगनाथ शेष-शय्या पर योगनिद्रा में शयन कर रहे थे।

सभी देवताओं ने अनेकों प्रकार से प्रार्थना करके भगवान को जगाकर निवेदन किया कि- ''हे महाप्रभु! वर्तमान में यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने आपकी दोनों विभूतियों में शुद्ध सत्वमय वातावरण निर्माण कर दिया है। ऐसा इससे पूर्व कभी भी नहीं हुआ था।'' यह कहकर यमराज के द्वारा की गई प्रार्थना के आशय को भी पितामह ब्रह्माजी ने भगवान के सन्मुख सुना दिया।

भगवान श्रीरंगनाथ ने देवताओं की प्रार्थना को सुनकर विस्मय के साथ समस्त जगत का अवलोकन करते हुये देखा कि यतिराज श्री रामानुजाचार्य के विलक्षण प्रभाव के कारण निर्दोष शुद्ध सत्वमय दोनों विभूतियों का एक ही सात्विक स्वरूप हैं। यह देखकर भगवान ने विचार किया कि लीला और त्रिपाद नामक मेरी जो दो विभूतियाँ है, इनमें एक रूपता आज तक कभी भी नहीं हुई हैं। दोनों की पृथक-पृथक व्यवस्था है। सत्व, रज एवं तमो गुण वाली मेरी यह लीला विभूति अनित्य है। और जो भोग (त्रिपाद) विभूति है।

वह सदा शुद्ध सत्वमयी और नित्य है। जो वर्तमान में यतिराज की विलक्षणता के कारण समान प्रतीत हो रही है। यह महान आश्चर्य है। इस संसार में भगवत् स्वरूप बोधक सत्शास्त्र, मोक्षप्रद श्रेष्ठ आश्चर्य और अत्यन्त गोपनीय सत्य अर्थ का सबके लिये सर्वथा और सर्वत्र अतिशीघ्रता से उपदेश कर यतिराज ने जिनकी रक्षा की जिनकी मैं स्वयं रक्षा नहीं कर सकता था। ऐसे अंध, बधिर, मूक, जड़ और पतितों के लिये मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित कर लोक की रक्षा की है। वे केवल आचार्य संबंध मात्र से संसार को परमपद दे रहे हैं। आज संपूर्ण लोग उनके आधीन हैं। भूमंडल के समस्त प्राणी सर्वत्र रामानुजीय श्रीवैष्णव ही दिखायी पड़ रहे है। यह सभी निर्दोष नित्य मुक्तों की भाँति है।

इस प्रकार सोचते हुए भगवान ने मन में विचार किया कि मैंने निश्चय ही श्रीलक्ष्मी जी के कहने में आकर दोनों विभूतियों का स्वामित्व यतिराज को सौंपकर बड़ी भारी भूल की है। लक्ष्मी जी के स्त्री हठ के कारण मैंने रामानुजाचार्य को उभय विभूति का अधिकार दे दिया। लेकिन अब इसका विपरीत फल मुझे ही भोगना पड़ रहा है। यह बात सत्य है कि स्त्री के वशीभूत होकर ही संसार में मनुष्य अयोग्य कर्म कर बैठता है। देवता, मनुष्य, ऋणि, महर्षि सभी स्त्रियों की मोहक बातों में आकर उस समय में कुछ ऐसा कार्य कर बैठते हैं जिसके लिये बाद में उनको पश्चाताप करना पड़ता है। समस्त देवताओं के लिए भी स्त्रियाँ दुर्जय है, फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या? इतने पर भी यतिराज श्री रामानुजाचार्य के शिष्य कामादि दोषों से सर्वथा रहित हैं। इसलिये उनके द्वारा मेरा वैकुंठ लोक जीत लिया गया है। ब्रह्म, शिव, देवेन्द्र, योगीन्द्र, मुनीद्रों के लिये परम दुर्लभ वैकुंठ आज यतिराज के शिष्यों के लिये परम सुगम बन गया है। यद्यपि इस अघटित घटना को करने वाली माया का अधिपति मैं स्वयं हूँ फिर भी यह कार्य मेरे लिये महान विस्मय जनक है। यह निश्चय ही रामानुजाचार्य ही विलक्षण महिमा है जो सबके लिये अवर्णनीय है। यतिराज रामानुजाचार्य से संबंध रखने वाले जितने भी मनुष्य हैं, वे सब मुख्य रूप से आचार्य निष्ठ एवं काम-क्रोधादि षड्विकारों से सर्वथा रहित हैं, तथा द्रविड़ वेद, वेदान्त, तत्वत्रय आदि रहस्यों के ज्ञाता और समदर्शी हैं। वे सब पंचसंस्कारों से युक्त आकारत्रय (अनन्यार्हत्व, अनन्य-शरणत्व, अनन्य-योग्यत्व) संपन्न और परम भागवत हैं। ऐसे महाभागवत ही मेरे पद पर विजय प्राप्त करते हैं, अर्थात् परमपद पाते हैं। संसार में इस समय आसेतु हिमालय कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसका किसी भी प्रकार से यतिराज के साथ संबंध न हो। अतः अब लीला विभूति में मेरी कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। ऐसा सोचकर लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीरंगनाथ ने अपनी लीला के निमित्त भगवद्द्वेषी महाबलवान चोलराजा को उत्पन्न किया जो आगे चलकर कृमिकंठ के नाम से कुख्यात हुआ।

भगवान ने जिस तरह हिरण्यकश्यप, हिरण्याक्ष, रावण, कुम्भकर्ण प्रभृत्ति राक्षसों को अधर्म की अभिवृद्धि के लिये उत्पन्न किया था। वैसे ही धर्म और भगवान से द्वेष रखने वाले इस चोलराजा को उत्पन्न कर भगवान देवताओं को प्रसन्न कर शांत हो गये। भगवान की लीला विचित्र एवं अपरंपार है इसलिये इस लीला के रहस्य को कोई भी नहीं जान सका। भगवान अपनी प्राणवल्लभा भगवती श्रीलक्ष्मीजी के साथ शेष-शय्या पर विचित्र लीला का संचालन करते हुए सो गये और ब्रह्म, शिव, इन्द्र, यम आदि आगन्तुक देवता सन्तुष्ट होकर अपने-अपने लोकों में चले गये।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य के विलक्षण प्रभाव के कारण सर्वत्र श्रीवैष्णवता का प्रचार हो गया। जिससे घबराकर यमराज पितामह ब्रह्माजी की शरण गये। ब्रह्माजी समस्त देवताओं के साथ श्रीरंगनाथ भगवान के पास आये और श्रीरंगनाथ भगवान ने यमराज का दुःख मिटाने के लिये यमराज के मित्र चोल नरेश को उत्पन्न किया।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य द्वारा दोनों विभूतियों में सात्विकता का प्रचार नामक इस कथा प्रसंग को जो मनुष्य पढ़ते या श्रवण करते हैं, उनके समस्त पापों का नाश होकर अंत में परम दुर्लभ वैकुंठ लोक की प्राप्ति होती है।

।।श्री प्रपन्नामृत का 43वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

युवा

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता का आदेश

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

भगवद्गीता का मतलब है कि ''भगवान का उवाचित जीवन का उपदेश है।'' भारत में आज से पाँच हजार वर्ष पहले, साक्षात् भगवान ने मनुष्यों को आदेश जारी किया कि जीवन का दर्शनिक रूप किस ढंग का हो। अच्छे खासे जीवन के लिए किन-किन आदर्शों का पालन किया जाय।

गीता में मनुष्यों के बीचों बीच के संबंधों, विचारों, तत्वों तथा आचार विचारों का भी जिक्र कर दिया गया है। मनुष्य के जीवन की परिधी व परिक्रमा का भी गीता में विस्तार है। गीता मानव-जीवन की ''लक्ष्मणरेखा'' है। किन-किन नियमों का पालन करें और किस रास्ते के अनुसरण पर जीवन का सुखमय विस्तार होगा इस विषय विवेचन पर गीता ने गौर किया है।

भगवद्गीता में वेदों का राज छुपा हुआ है। गीता वेदों का सार है। गीता में अति सुलभ रीति में वेद विज्ञान भरा हुआ है। हम तो वेदों का अध्ययन कर सकेंगे नहीं, क्यों कि वेद निरे संस्कृत भाषा में रचित हैं। अतएव गीता के पठन से हमें वेदों का भाव सरल गति से अवगत हो जायेगा।

इतना ही नहीं, बल्कि हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि भगवद्गीता हिन्दू धर्म की आधार शिला है, जिस महान् बुनियाद पर अखंड भारत का राजमहल खडा है। हम धीरज के साथ यह वाद स्थापित कर सकेंगे कि समूचे संसार में आज तक ''भगवद्गीता'' के समान के ग्रन्थ का आविष्कार न हो पाया है, जो एक सगे बंधू की तरह साथ चल कर या साथ देकर मार्ग-निर्देशन किया हो।

भगवान की देन

आदमी समझता है, अज्ञान वश कि सब कुछ अपना कमाया हुआ वैभव एवं संपत्ति अपने ही कष्ट या परिश्रम की कमाई है। भगवान ने अपनी गीता में मनुष्य के इस अहंकार-युत भाव को नकारा है। जो भी वैभव या संपदा आदमी की कमाई हुई कतई न होगी, बल्कि वह स्वयं भगवान की देन होगी। श्रीस्वामी ने इसका स्पष्ट आदेश दिया है, यों -

श्लोक : *यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जित मेववा।*
तत्तदेवा वगच्छत्वं - मम तेजोंशसंभवम्।।

मनुष्य जो है अल्प-शक्ति से भरा हुआ जीवी है। वह सिर्फ इतना कुछ करने का अधिकारी है, जो एक अल्प प्राणी या शक्तिवाले जीव के अधीन में हो सकता है। महा वैभव, विस्तारपूर्ण क्रिया-कलाप जो है, वह निरे

भगवान की अनुकंपा या सहायता के बिना संभव नहीं हो पाते। यह भगवान की अनुकंपा या सहायता प्रत्यक्ष ढंग की न होकर, परोक्ष पद्धति में प्राप्त होने वाले तत्व हैं। जब तुम्हें - अतिकाय जीवन की सफलता प्राप्त हो गयी हो, तो तुम्हें इस सफलता में अवश्य परमात्मा की मदद मिली होगी। इसके लिए तुम्हारे पुराकृत पुण्य की साधना काम आयी होगी, जिस कारण भगवान ने तुम्हारी सहायता की थी।

जो मनुष्य पुण्यतम जीवन यान अपनाता है, उस मनुष्य में परमात्मा की शक्ति आ बसती है। यह शक्ति ही भगवान की 'महिमा' है। इसी दैव शक्ति से भरा मनुष्य जीवन की सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे 'ऋजुवर्त्तन' वाले मनुष्य, जो भी माँगेगा और वह जो भी संकल्प करेगा, उसकी सिद्धि हो जावेगी। उसका साकार हो आयेगा।

इसका यह मतलब है कि संकल्प सिद्धि जो बात है, वह निरा आर्जित संपत्ति है। दान, पुण्य, ऋजुवर्त्तन, धर्म या नियम बद्ध जीवन से भगवान की दया की पात्रता हो सकती है।

जब भगवान की दया प्राप्त हो, तो संकल्प सिद्धि हो जायेगी। गीताकार श्रीकृष्ण भगवान ने उपरोक्त श्लोक में यही बताया है कि संपदा, शक्ति, नायकत्व (राजत्व), समर्थता आदि 'महत्व' है, जो मेरे अधीन होते हैं। जब तुम इन महत्त्वों के पात्र व अधिकारी बनोगे, तो मैं इन तत्वों को तुममें उपजने देता हूँ, अर्थात् तुम्हें देता हूँ। मनुष्य की शक्ति, सामर्थ्य, वैभोग, नायकत्व, संपदाएँ आदि इस प्रकार भगवान से दिये हुए अंश मात्र हैं।

श्लोक : *यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।*
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

मनुष्य की रक्षा या तारणा ही नहीं, बल्कि भगवान स्वयं जनम लेकर लोगों के बीचों-बीच आयेगा। यही है- अवतार परंपरा।

हम सब श्रीस्वामी के सृजित प्राणी हैं - अपने अपने कृत पाप - पुण्यों के अनुसार, तरह-तरह की योनियों में जन्मे हुए। ऐसे अपने परंधाम के सृजित हम प्राणियों पर श्रीस्वामी कोई उपद्रव आने न देगा। जब भी मानव मात्रों पर कोई संकट आ पडा हो, तो उसके निवारण का सामर्थ्य मनुष्यों में हुआ होगा। जब मनुष्यों में संकट-निवारण का कोई उपाय न हो पाया, तो भगवान स्वयं जनम लेकर इस धरती पर उतर आयेगा और मनुष्यों की तारणा कर जावेगा।

जब-जब इस धरती पर धरम की हानि होयेगी और भारत को किसी आतंकवादी से दुखित हो जाना पडेगा, तो धर्मोद्धार तथा देश के दुःख के हरण के लिए- मैं स्वयं अपने आप सृजित हो करके इस धरती पर आता हूँ। ऐसा परंधाम मनुष्य को आश्वासन दिलाता है! और भी- ''साधु-सज्ञनों के उद्धार के लिए, दुर्जन लोगों का नाश करने-हेतु, धर्म के संस्थापन के वास्ते - मैं युग-युग में (समय-समय पर) संभवित होकर आता हूँ। यह था परमात्मा का महा धीरजवाला आश्वासन।''

समापन

गीता 18 अध्यायों वाला एक विशद जीवनोपयोगी ग्रन्थ है। इसमें 745 श्लोक संकलित हैं। भगवद्गीता मनुष्य के जीवन के समस्त कोणों तथा अंगों से संबन्ध रखता है और जीवनोपयोगी समाधान प्रस्तुत करता है। गीताशास्त्र का लग भग सभी सांसारिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। दुनिया के बहुत से लोग गीताशास्त्र का अनुसरण करते हैं।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

36) तिरुतेत्रियंबलम् (तिरुनांगूर)

शीरकाळि से 8 कि.मी. दूरी पर तिरुनांगूर में ही है। शीरकाळि-चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में 261 कि.मी. पर है। यह क्षेत्र पळिळ कोण्ड पेरुमाळ नाम से प्रसिद्ध है।

मूलमूर्ति - चेंकण्माल, रंगनाथन, श्रीलक्ष्मीरंगर, पूर्वाभिमुखी चतुर्भुज भुजंगशयनम।

तायार (माताजी) - चेंकमलवल्लि।

तीर्थ - सूर्य पुष्करिणी।

विमान - वेद विमान।

प्रत्यक्ष - नाच्चियार, अनंताल्वार।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद। यहाँ के भगवान तिरुनांगूर के 11 गरुड सेवा उत्सव में पधारते हैं।

37) तिरुमणिक्कूडम् (तिरुनांगूर)

शीरकाळि से 8 कि.मी. दूरी पर तिरुनांगूर से एक कि.मी. पर है। चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में चेन्नै से तिरुच्ची 261 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - वरदराजपेरुमाल (मणिक्कुडनायकन) पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - तिरुमामकळ नाच्चियार (श्री देवी) भू देवी।

तीर्थ - चन्द्र पुष्करिणी।

विमान - कनक विमान।

प्रत्यक्ष - पेरिय तिरुवडि-(गरुड भगवान), चन्द्र यहाँ के भगवान तिरुनांगूर की गरुड सेवा में पधारते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

38) तिरुवेळ्ळकुलम् (अण्णन कोयिल)

यह क्षेत्र शीरकाळि-नागै बस मार्ग में शीरकाळि से लगभग 10 कि.मी. पर है। शीरकाळि स्टेशन-चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में 261 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - श्रीनिवासन, कण्णन, नारायणन्, अण्णन् पेरुमाळ (तिरुपति वेंकटाचल भगवान के बडे भाई) पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार - अलर्मेल् मंगै तायार्। पद्मावती (उत्सवर) पूवार तिरुमकळ।

तीर्थ - तिरुवेळ्ळक्कुळम्।

विमान - तत्वद्‌योदक विमान।

प्रत्यक्ष - रुद्र श्वेतराजन।

यह तिरुमंगै आल्वार की धर्मपत्नी कुमुदवल्लि का जन्म स्थल बताया जाता है यहाँ के भगवान तिरुनांगूर की 11 गरुडसेवा में पधारते हैं। इस क्षेत्र को दक्षिण-तिरुपति भी कहते हैं। तिरुमल भगवान की मनौतियाँ यहाँ समर्पित कर पूरा करते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

पोय्यै च्चुरक्कुम् पोरुळै त्तुरन्दु, इन्द प्पूतलत्ते
मेय्यै प्पुरक्कु मिरामानुजन् निर्क्क, वेरु नम्मै
उय्यक्कोळ्ळ वल्लदेय्व मिंगियादे न्नुलर्न्दु अवमे
ऐयप्पडा निर्प्पर्, वैयत्तुळ्ळोर् नल्लरिविळन्दे॥७९॥

भूतलेऽस्मिन्नसंबद्धार्थप्रचारकदुर्मतनिरसनपूर्वकं प्रतिष्ठापितपरमार्थे भगवति रामानुजे विराजमाने सत्यपि तत्प्रभावमजानन्तो लौकिकाः स्वात्मोज्जीवनदक्षिणं किमपि दैवतमन्यदस्ति वेति विचारयन्तो हन्त मुधा परिक्लिश्यन्ते दुर्भगाः॥

इस भूतल पर असत्य अर्थों का ही प्रचार करनेवाले दुर्मतों का खंडन कर सत्य अर्थों की रक्षा करनेवाले भगवान श्री रामानुज स्वामीजी के विराजमान रहते हुए ही, इनकी परवाह नहीं करते हुए पृथ्वीतलनिवासी (भाग्यहीन) मानव यह चिंता करते हैं कि, ‘‘हमारा उद्धार करने में समर्थ देव कौन हैं।’’ और दुःखी होकर, विवेक शून्य बनकर हाय! व्यर्थ ही शंका कर रहे हैं।

क्रमशः

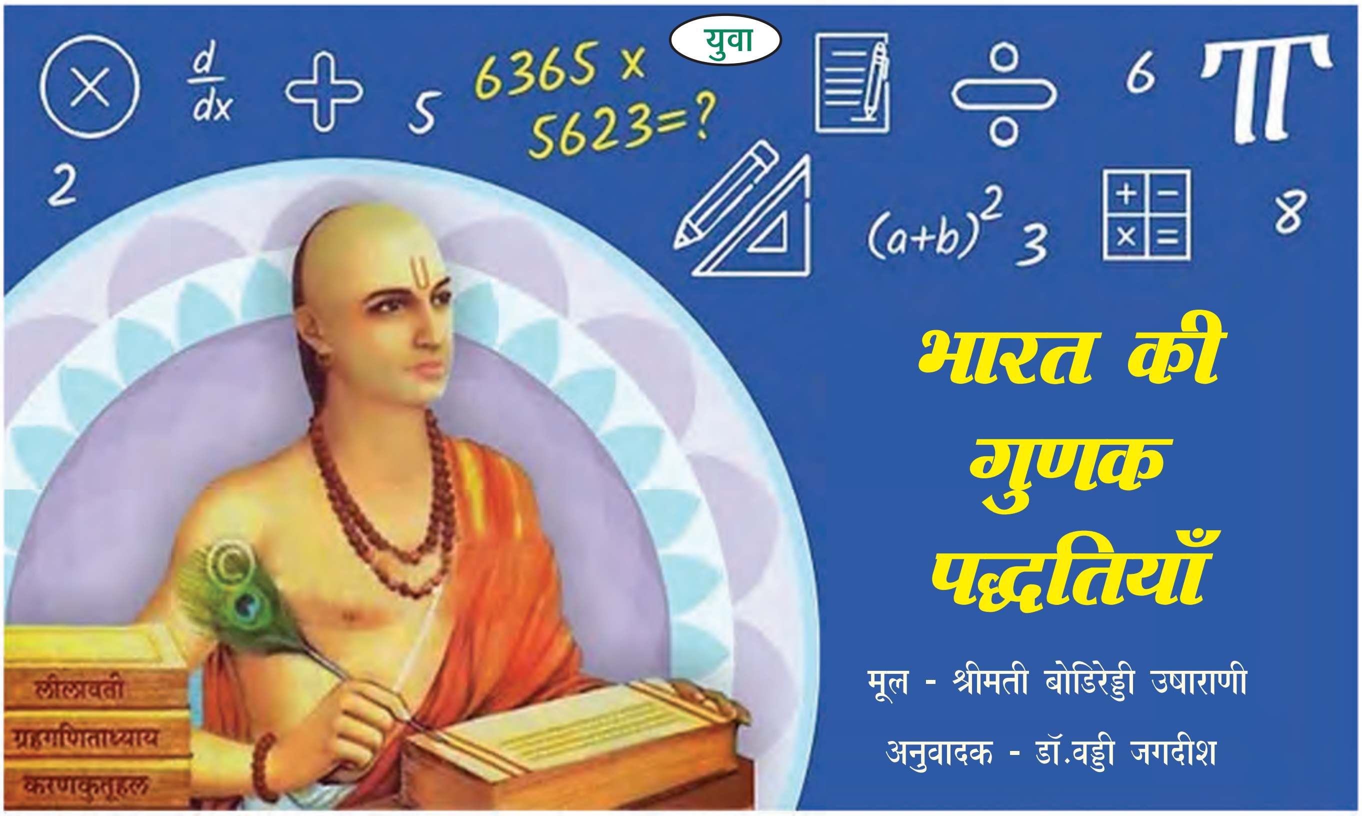

भारत की गुणक पद्धतियाँ

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

गुणक पद्धतियाँ हर एक देश में उपयोग की जाती हैं। लेकिन हर एक देश के लिए प्रत्येक तरीका होती है। भारत देश वेदों का देश है। इस देश में गुणक की पद्धतियाँ वेदें से सम्मिलित हैं। ये पद्धतियों को एक बार विचार करेंगे...

यहाँ तीन प्रकार की पद्धतियाँ प्रमुख हैं।

पद्धति : (1) साधारण गुणन विधि :

इस पद्धति में आप गणना की जानेवाली संख्या के नीचे अंकों का फल लिखते हैं। उसके बाद संख्या का गुणा कीजिए। एक एक संख्या से गुणना करने के बाद एक तरफ बाए ओर से शुरू करके संख्याओं को लिखिए। बाद में संख्याओं को मिलाने से वास्तविक फल मिलता है।

उदा : 42X34 चाहिए तो...

```
   42
   34
 ----
  168
 126
 ----
 1428
 ----
```

4 से पहले गुणना करने के लिखना। बाद में 3 से गुणना करके एक संख्या बाए ओर से आरंभ करके संख्या को मिलाने से लब्ध आता है। ऐसे जितना चाहिए उतने प्रकार बाए ओर शुरू करके संख्याओं का मिलावट से लब्ध या फल मिलता है।

पद्धति : (2) एक-एक करके लाभों की नीचे लिखकर गुणा करने की विधि :

इस पद्धति या विधि में क्रमशः संख्याओं के गुणन फल को सीधे-सीधे लिखने की आवश्यकता नहीं होती, पहली संख्या को दूसरी संख्या के विलोम दिखाने पर प्रत्येक रूप से नीचे दी गई विधि में गुणना करना।

उदा : 42X34 चाहिए तो...

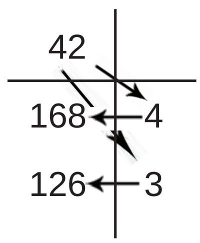

पहले 4 से गुणना करके उस का फल 168 को लिखिए फिर 3 से गुणना कर उस फल को 126 को नीचे लिखिए। अब ये 168 से 126 को घटाने से जवाब 42 होता। यहाँ हमारे गुणने की विधि सही है।

यहाँ प्रथम स्थान का अंक- 8 है...

दशम स्थान पर संख्या आने के लिए 6+6=12 में 2 से दशम रूप में मानकर 1 को मन में रखना है। शतक स्थान की संख्या आने के लिए 1+2=3 को मन की संख्या 1 को मिलाने से 4 होता है। हजार स्थान की संख्या तब 1 होता है।

अब 42X34= 1428 होता है।

ऐसे 237X432 चाहिए तो...

237	
474	2
711	3
948	4

432 को 234 को मानकर ऊपर से नीचे लगातर लिखना चाहिए। 2, 3, 4 से क्रमशः गुणना कर लिखिए।

यहाँ प्रथम स्थान की संख्या 4,

दशम स्थान की संख्या 7+1=8

शतक स्थान की संख्या आने के लिए 4+1+8=13

यहाँ 13 में 3 को लिख खर 1 को मन में रखना...

हजार स्थान की संख्या आने के लिए 7+4=11 को मन की संख्या 1 को मिलाने से 12 आता है। इस में 2 लिख कर 1 को मन में रखना चाहिए।

दस हजार की संख्या आने के लिए 9 को मन की संख्या 1 को मिलाने से आने वाला फल को दस हजार स्थान के पहले लिखिए...

अब 237X432=102384

इस प्रकार दूसरी विधि से गुणना कर सकते है।

पद्धति : (3)

इस पद्धति में कई पहाडें कंठस्थ आने पर गुणकों को बहुत कम पंक्तियों में कर सकते हैं। इस

पद्धति आजकल उपयोग में नहीं है। फिर भी थोड़ा जानकारी पाने से जल्दी गुणना कर सकते है।

इस विधि में गुणना करनेवाली संख्या से गुणना करने वाली संख्या को नीचे लिखना चाहिए। गुणना करने वाली संख्याओं से अंकों को क्रमशः लेकर गुणना करनेवाली संख्याओं की अंकों को दो भागों में विभाजित कर पहले भाग को लिखना चाहिए। बाद में दूसरे भाग को इसी प्रकार गुणना करके दो स्थानों को लिखा कर मिलना।

उदा : 2432X1612 चाहिए तो...

```
    2432
    1612
--------
   29184
  38912
--------
 3920384
--------
```

यहाँ 1612 को 16, 12 के रूप में विभाजित किया गया है पहली संख्या 2432 की अंकों से क्रमशः 12 से गुणना करके प्रथम पंक्ति में लिखिए। बाद में 2432 की अंकों से क्रमशः 16 को गुणना करके दो स्थानों को छोड़कर बाए ओर लिखकर उस का फल को मिलाने से लब्ध फल मिलता है।

12 को 2, 3, 4, 2 से गुणना करने पर 29184 आता है। बाद में 16 को 2, 3, 4, 2 से गुणना करने पर 38912 आता है। ऊपर के प्रकार मिलाने से 3920384 आता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 501. चित्तूर जिला।

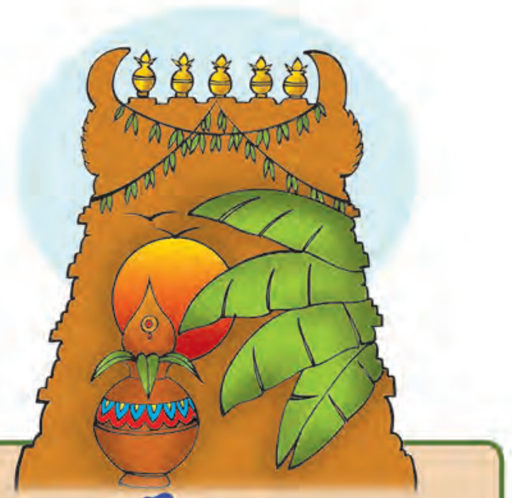

प्रश्न और समाधान

तेलुगु मूल - ब्रह्मश्री सामवेदं षण्मुखशर्मा

अनुवाद - श्रीमती पी.सुजाता

1) समुद्र-स्नान के क्या नियम हैं?

स) समुंदर को जब चाहे न छूना चाहिए। विनोदार्थ, विलासार्थ समुंदर से खेलना मना है। मंगल तथा शुक्रवारों में समुद्र का स्नान वर्जित है। पर्वों के दिनों में ही समुद्र का स्नान करना चाहिए। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, माघ मासों में समुंदर का स्नान उचित है। समुंदर में स्नान करने से पहले, बाहर, ठंडे पानी से नहाना चाहिए। स्नानानंतर पुनः ठंडे पानी से नहाना जरूरी है। पंद्रह मिनट से ज्यादा समय तक समुंदर में स्नान करना चाहिए। स्नान के लिए उतरने से पहले समुंदर को नमस्कार करके, संकल्प बता कर, बाहर की मिट्टी को अंदर डालकर स्नान करना चाहिए। स्नान के दौरान मौन रखना है तथा दैव-स्मरण करते रहना चाहिए। जो तैरना न जानता हो, उसे समुंदर में स्नान न करना चाहिए।

2) जन्म-नक्षत्र में क्या करें और क्या नहीं करें?

स) जन्म-नक्षत्र में याग, चौलकर्म, अन्नप्राशन, व्यवसाय, उपनयन, भू-संपादन, अक्षराभ्यास कर सकेंगे। शुभकर है। सीमंत, गर्भदान, क्षुरकर्म, औषध-सेवारंभ, प्रयाण न करें। अशुभ होता है। स्त्रियों के लिए जन्म-नक्षत्र में ब्याह आदि करना अच्छा ही है, जब कि पुरुषों के लिए विवाह-कर्म मना है।

3) पीड़ा-सपने और उनका प्रभाव रोकने का उपाय क्या हो?

स) गोविंद-नाम-स्मरण करके सोने से पीडा-सपने नहीं आते। यदि आये, तो भी उनका प्रभाव इतना न रहेगा। गजेन्द्र-मोक्ष का कथा, त्रिमूर्तियों का स्मरण करते हुए सोने पर, फिर जागते ही इनका स्मरण करने पर दुस्वप्नों का प्रभाव न रहेगा। सुबह ही तिनकों से गणेशजी की अर्चना करने पर भी भलाई होगी। नारायण दुस्वप्न नायक है।

4) कहते हैं उत्तर दिशा पर सिर रखके न सोया करें। क्या यह सच है? क्या नींद के भी नियम होते हैं?

स) उत्तरी दिशा पर सर रखके कभी न सोया करें। स्वगृह में पूरब की दिशा में, ससुराल में दक्षिण की दिशा पर, प्रवास में पश्चिमी दिशा पर सर रखना चाहिए। भीगे कपड़ों से न सोयें। पाँव धोने पर साफ पोंछ कर सोयें। पालाश, पीपल, जामुन, बोधि आदि लकडी से बने पलंग पर न सोयें। जल-मध्य में, शत्रुओं के बीच, धान्य के बीच कतई न सोयें गायें, देवता-मूर्तियों, गुरुलोगों से ऊँचे स्थल पर न सोया करें। किसी पदार्थ को मुँह में रखकर न सोयें।

5) नये तुलसी के पौधे को बोने या बदलने की मुहूरत को देखना क्या?

स) शास्त्ररीत्या, आषाढ़-शुद्ध-एकादशी से कार्तिक-शुद्ध-एकादशी तक के समय को 'चातुर्मास्य' कहा जाता है। उन दिनों में तुलसी के पौधे को बदल कर बोना मना है। एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा, अमावास्या, शुक्रवारों पर तुलसी काटना मना है।

6) बच्चों के नामकरण के कुछ शास्त्र-नियम हैं क्या? अपनी इच्छानुसार नाम न दे सकते?

स) हाँ, यह उनके आभिप्राय के अनुसार होयेगा। मगर फिर भी, शास्त्र पर जिन्हें आदर होता है, कुछ नियमों को पालन करने की आवश्यकता है। कुछ शास्त्रियों का कहना है कि नामकरण नक्षत्ररीत्या करें। मगर, संप्रदाय-सिद्ध नियमों के अनुसार-

1) लडके के नाम के अक्षर सरि-संख्या में, और लडकियों के नामों के अक्षर बेसि-संख्या में हों।

2) यदि महर्षियों, देवताओं, अपने वंश के पूर्वजों के महात्माओं के नाम दें, तो उनकी शीघ्र वृद्धि होगी तथा वे कीर्ति, प्रख्याति और आयु की वृद्धि पायेंगे।

3) कठिनतर, अधिक द्वित्वाक्षरों से युत नाम उन्हें न दें।

4) नदियों, पेड़ों तथा जंगलों का नाम न देना अच्छा होगा।

आयुर्वेद

खीरे के स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

खीरा और सलाद एक दूसरे के पर्याय हैं। विशेषज्ञों द्वारा इसे अक्सर एक फल के साथ-साथ एक सब्जी के रूप में माना जाता है क्योंकि यह कद्दू और तरबूज के समान पौधे परिवार से संबंधित है। आश्चर्यजनक रूप से ताजा करनेवाले खीरे लंबे और दुबले होते हैं, जो कई रंगों में उपलब्ध होते हैं। एल्डिहाइड की उपस्थिति के कारण उनके पास एक अलग हल्का तरबूज जैसा स्वाद और गंध है। खीरे के छिलके में हल्का सा कडवापन उसमें मौजूद कुकुर्बिटासिन के कारण होता है।

खीरे के लगभग 100 विभिन्न प्रकार हैं। कुछ आमतौर पर सुपरमार्केट या किसान बाजारों में पाए जाते हैं जैसे अंग्रेजी, फारसी और किर्बी खीरे, जबकि अन्य अधिक दुर्लभ हैं, जैसे सफेद खीरे। कुछ आसानी से सुपाच्य होते हैं, दूसरों को खट्टे अचारवाले होते हैं। सभी खीरे जो आम है उनको रसोई में उपयोग किया जाता है।

खीरा एक रेंगनेवाली लता है जिसकी जड़े जमीन में होती हैं और तने पतले, घुंघराले तने का सहारा लेकर ऊपर चढ़ते हैं। इसमें बडी पत्तियाँ और चमकीले पीले फूल होते हैं, जो लंबे, हरे रंग के फलों को पतला सिरों के साथ बनता है। यह असम, पूर्वी हिमालय, पश्चिम हिमालय, बांग्लादेश, दक्षिण-मध्य-चीन, म्यांमार, नेपाल, थाईलैण्ड, तुर्कमेनिस्तान का मूल निवासी है। यह गर्म और नम जलवायु में बहुत अधिक धूप और अच्छी तरह से सूखा मिट्टी के साथ सबसे अच्छा बढ़ता है।

ककडी की उत्पत्ति प्राचीन भारत से हुई थी; इसकी खेती 3000 साल पहले की गई थी। खीरे की शुरुआती प्रजाति आधुनिक खीरे की तुलना में काफी कडवी मानी जाती है। बाद में वे व्यंजनों में शामिल होने लगे।

खीरा के औषधीय गुण

स्वाद - मधुर (मीठा)

गुण - लघु (हलका)

विपाक - मधुर (पाचन के बाद मीठा स्वाद आता है)

वीर्य - शीतल (ठण्डा)

कर्म (क्रिया) - पित्तहर, आसानी से पेशाब करने में मदद करता है।

Botanical Name : Cucumis Sativus Linn

Family : Cucurbitaceae

प्रयोज्यागं - फल, बीज

मात्रा - ताजा रस 25 to 50 ml

बीज का चूर्ण 3 to 6 grams

आरोग्य में खीरे का उपयोग

1) खीरे का सेवन प्यास, पूरे शरीर में जलन को दूर करने के लिए किया जाता है।

2) खीरे का रस पेशाब की जलन को दूर करने में मदद करता है।

3) खीरे के बीजों को पानी में मिलाकर पीने से प्यास मिटती है।

4) मांसपेशियों की सामान्य कमजोरी को दूर करने के लिए सूखे बीजों का चूर्ण 3 to 5 grams मात्रा में लिया जाता है।

5) खीरे के टुकडे को सिर पर लगाने से नीन्द में खलल, अनिद्रा से राहत मिलती है।

6) मूत्र पथ के संक्रमण और पथरी के इलाज के लिए सुबह उबले हुए चावल या चावल की दलिया के साथ खीरे के स्लाइस दिए जाते हैं।

7) मूत्र पथ के संक्रमण में, ककडी का रस अपने शीत गुण के कारण जलन को नियंत्रित करने में मदद करता है।

8) यूरिक एसिड जमा होने के परिणाम स्वरूप जोडों में सूजन और दर्द होता है। इसे गाउटी आर्थराइटिस बोलते हैं। खीरा इन लक्षणों को कम करने में मदद करता है।

9) खीरे में 96% पानी होता है। खीरे का सेवन शरीर द्वारा पानी की दैनिक आवश्यकता को पूरा करता है, जिससे हम हाइड्रेटेड रहते हैं।

10) खीरा पोटेशियम, मैग्निशियम और आहार फाइबर का एक अच्छा स्रोत है। ये पोषक तत्व रक्तचाप को कम करने के लिए जाने जाते हैं, इस प्रकार हृदय रोगों के जोखिम को कम करते हैं। शोध से यह भी साबित हुआ है कि खीरे के रस का नियमित सेवन उच्च रक्तचापवाले बुजुर्ग लोगों में रक्तचाप को कम करने में सहायक होता है।

11) खीरा हमारे पेट के लिए शीतलक का काम करता है।

12) खीरे में पानी को उच्च मात्रा हमारे मल को नरम बनाती है, कब्ज से बचाती है और हमारे मल त्याग को नियमित रखती है।

13) खीरा रक्त शर्करा के स्तर को कम करने के लिए जाना जाता है, इस प्रकार यह मधुमेह के प्रबंधन और रोकथाम में सहायक होता है।

14) खीरे का उच्च पानी और कम कैलोरी सामग्री वजन कम करने में मदद करती है।

15) खीरा बेहतरीन सौन्दर्यवर्धक है। ये त्वचा पर कमाल का असर दिखाते हैं।

16) खीरे के रस को त्वचा पर लगाने से त्वचा मुलायम और चमकदार बनती है। खीरे के जलनरोधी प्रभाव स्वाभाविक रूप से हमारी त्वचा को हल्का करते हैं और टैनिंग को कम करते हैं। यह झुर्रियों और फाइन लाइन्स को भी कम करता है।

17) खीरे के स्लाइस को आंखों पर करीब 10 मिनट तक रखने से आंखों को आराम मिलता है और आंखों के आस-पास की सूजन कम हो जाती है।

18) खीरे में मौजूद फाइबर कोलोरेक्टल कैंसर से बचाता है। साथ ही खीरे में मौजूद कुकुर्बिटासिन में कैंसर रोधी गुण होते हैं।

19) खीरे में सिलिका होता है जो बालों और नाखूनों की देखभाल के लिए बहुत अच्छा होता है। ये नाखूनों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं और उन्हें भंगुर होने से रोकते हैं।

अधिक मात्रा में खीरे का सेवन करने के साइड-इफेक्ट्स

1) कुछ लोगों के पेट फूलने जैसी पाचन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं।

2) किडनी की समस्यावाले लोगों को ज्यादा खीरे का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि यह उनके शरीर में पानी की मात्रा पोटैशियम को बढ़ा सकता है, जो उनके लिए हानिकारक है।

3) ब्लड थिनर लेनेवाले लोगों को बहुत अधिक खीरे का सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनमें मौजूद विटामिन के रक्त के थक्के जमने को और मुश्किल बना सकता है।

4) खीरे से एलर्जी वाले लोगों में पित्ती, सूजन और सांस लेने में कठिनाई जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

''स्वस्थ रहें सुरक्षित रहें।''

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - आचार्य के.सूर्यनारायण

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

सप्त विंशः पाठः - सत्ताईसवाँ पाठ

तक्रम् = छाछ

क्षीरम् = दूध

पानीयम् = जल/पानी

गन्तुम् = जाने के लिए

नेतुम् = लेकर जाने के लिए

आनीय = लाकर

वदति = बात कर रहा है/रही है

आह्वयति = आमंत्रित कर रहा है/रही है

आह्वास्यति = आमंत्रित कर सकते हैं

प्रश्न : (अ)

1. अद्य क्षीरं सम्यगस्ति।
2. त्वं गत्वा क्षीरमानीय क्षीरान्नं कुरु।
3. वयं सर्वे पानीयमानेष्यामः।
4. तक्रमानेतुं कः अगच्छत्?
5. ते बालकाः घृतार्थमागच्छन्।
6. गृहे किञ्चिदपि लवणं नास्ति।
7. यूयं मम जनकम् आनयथ।
8. युष्मत् कूपे जलं लवणम् अस्ति।
9. त्वं स्नानं कृत्वा शीघ्रमागच्छ।
10. यूयं ममानुजं झटिति भोजनार्थं वदता वयं गत्वा तथैव वदिष्यामः।

जवाब : (अ)

1. आज दूध अच्छा है।
2. तुम जाकर दूध लो और भोग लगाओ।
3. आइए हम सब ताजा पानी लेकर आयेंगे।
4. छाछ लाने कौन गया है?
5. वे लड़के घी केलिए आए हैं।
6. घर में जरा सा भी नमक नहीं है।
7. आप मेरे पिताजी को ले आओ।
8. तुम्हारे कुएँ का पानी खारा है।
9. आप स्नान करके जल्दी आइएँ।
10. आप मेरे भाई से भोजन केलिए तुरंत बोलिए। वही बात हम जाकर बताएँगे।

प्रश्न : (आ)

1. अगर वह वहाँ है, तो उसे बुलाओ।
2. मेरा पिताजी कहाँ, थोडा बताइएँ।
3. हमारे घर में छाछ लाने कौन गये थे?
4. हमें ही जाना चाहिए।
5. आप कब तक कहीं भी मत जाना।
6. हम कहीं नहीं जाएँगे।
7. हम यहाँ पर ही है।
8. वहाँ कुआँ है, धीरे से चलना।
9. बच्चों को चावल खाने केलिए बुलाइएँ।
10. यहाँ बच्चे नहीं है। जहाँ वे हैं उन्हें वहाँ से ले आइएँ।

जवाब : (आ)

1. सः तत्र भवति चेत् आह्वयतु।
2. मम पिता कुत्र अस्ति इति किञ्चित् वदत।
3. अस्माकं गृहे तक्रम् आनेतुं के अगच्छन्?
4. आस्माभिरेव गन्तव्यम्।
5. यूयं तावत् पर्यन्तं कुत्रापि मा गच्छतु।
6. वयं कुत्रापि न गच्छामः।
7. अत्रैव स्मः खलु।
8. तत्र कूपः अस्ति शनैः गच्छत।
9. बालकान् अन्नं खादितुम् आह्वय।
10. अत्र बालकाः न सन्ति। ते कुत्र सन्ति वा त्वमेव गत्वा आनय।

जुलाई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - आपके लिए यह माह उत्तम रहेगा। शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्नता से भरपूर बना रहेगा, परंतु अपने विचारों को संकुचित न करे उदार भावना बना कर रखें। नौकरी-व्यवसाय आदि कार्यों में सफलता, निर्माण कार्यों में प्रगति। सामाजिक कार्य में रुचि बढ़ेगी। छात्रों को जी-जान लगाकर पढ़ने का समय है।

वृषभ राशि - इस महीने राश्येश शुक्र का परिवर्तन होगा जो आपके लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। नीरोग, आकस्मिक धन प्राप्ति, यत्र तत्र सुखद यात्रा, रोजी-रोजगार में सफलता, संवाद से हर्ष, स्त्रीसुख, पुत्र सुख, वस्त्रप्राप्ति होगा। भूमि-भवन लाभ, धनलाभ के कुछ नए अवसर भी मिलेंगे। कृषि कार्यों में प्रगति।

मिथुन राशि - धैर्य-पराक्रम के बल पर अधिकार क्षेत्र का विकास होगा। आप फिजूल के खर्च को कम करने का प्रयास करे। परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति अनुकूल रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। संतान एवं कुटुंब से प्रसन्नता।

कर्कटक राशि - यह माह आपके लिए सामान्य रहेगा। आरोग्य सुख, यात्रा में अभिरुचि, मानसिक तनाव-व्यथा, पारिवारिक उत्तरदायित्व। संतान पक्ष कि चिंता, व्यापार में सफलता। शैक्षिक कार्यों में सफलता। स्वास्थ्य चिंता, आर्थिक पक्ष की चिंता, हो सके तो ऋण लेन-देन से बचे। आपको व्यापार में धनलाभ का अवसर प्राप्त हो सकता है, लेकिन आपके घर के खर्चों में वृद्धि भी होगी।

सिंह राशि - आप अपनी सोच को सकारात्मक रखें, उत्तम स्वास्थ्य, आर्थिक संतुलन, पारिवारिक सौहार्द्र, रोजी-रोजगार में सफलता। शुभ कार्यों का संपादन होगा। व्यवस्थित दिनचर्या, साधु समागम, अध्ययन में रुचि बढ़ेगी।

कन्या राशि - उत्तम स्वास्थ्य, अपने बुद्धि विवेक के द्वारा कार्य सिद्ध करेंगे। राजकीय सहयोग, अपने कामकाज को पूरी तरह सावधानी से करें, आपकी आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। कोई भी फैसला सोच-समझकर लें। शैक्षणिक शिथिलता, यात्रा सुखमय रहेगा।

तुला राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। धन-धान्य-नूतन वस्त्र-आभूषण की प्राप्ति होगी। अनेक स्त्रोतों के द्वारा धन प्राप्त होगा, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, आरोग्य सुख। विवाहित लोगों को दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त होगा।

वृश्चिक राशि - अपने वाणी-व्यवहार की कुशलता से किसी भी कार्यों का संपादन कर सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। बुध-शुक्र का परिवर्तन आपके जीवन में शुभफलदायक रहेगा। व्यापारिक कार्य सामान्य रूप से चलेगा। धन लाभ, कौटुम्बिक उत्तरदायित्व निर्वाहन, पारिवारिक सुख प्राप्त होंगे।

धनुष राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। यत्र तत्र मन भ्रमित रहेगा, अनावश्यक कार्यों में मन चलेगा। स्वास्थ्य उत्तम, संतान सुख प्राप्त होंगे। अपने सहयोगियों से अनुकूलता बनाए रखें जिससे आपका कार्य सुचारु रूप से सफल सिद्ध होगा।

मकर राशि - अनियमित दिनचर्या के कारण स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। मन में विभिन्न विचार उत्पन्न होंगे, अनावश्यक भागदौड़ कि स्थिति बनी रहेगी जिससे परेशानी होगी। अपने पारिवारिक कुटुम्बिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करे। कार्यक्षेत्रों में परिश्रम के द्वारा लाभ प्राप्त होंगे।

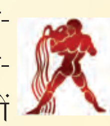

कुंभ राशि - स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, मानसिक तनाव-व्यथा, वाद-विवादों के कारण मन खिन्न रहेगा। रोजी-रोजगार-व्यवसायिक कार्यों में प्रगति, धनलाभ। छात्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। अपने से उच्चाधिकारियों से संपर्क होने पर पदोन्नति। पारिवारिक सहयोग।

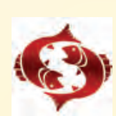

मीन राशि - शनि कि साढे साती का प्रभाव आप पर चल रहा है जिसके कारण स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। तनाव, वाद-विवाद कि स्थिति बनी रहेगी, आप धैर्य से काम करें। दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा, धनलाभ, राजकीय सहयोग प्राप्त होंगे। नौकरी पेशा में उन्नति।

नीतिकथा

वे हैं मेरे गुरु

- श्री के.रामनाथन

एक बार आनंदपुरम् नामक गाँव में शंकर नारायण नामक एक महापुरुष आए हुए थे। उनके दर्शन के लिए गाँव भर के लोग आते थे। एक आदमी ने उनको देखकर पूछा, ''मान्यवर महान, आपके गुरु कौन हैं?'' यह सुनकर उन्होंने जवाब दिया, ''प्रिय वत्स, मेरे हजारों गुरु होते हैं। सिर्फ उनका नाम बताने के लिए मुझे महीनों का समय लगेगा और उनके बारे में विस्तार से बोलना है तो मुझे सालों लगेगा। फिर भी मैं अपने प्रथम तीन गुरुओं के बारे में बताता हूँ।''

उन गुरुओं में एक है 'चोर'। एक बार मैं एक गाँव की ओर जा रहा था। रात हो गयी थी। उस समय मैं कहीं ठहरने केलिए कोई स्थान ढूँढ रहा था। तब मैंने देखा कि एक चोर किसी घर में चोरी करने का प्रयास कर रहा है। मैंने उसके निकट जाकर पूछा कि अरे मित्र! इस गाँव में ठहरने के लिए कोई स्थान मिल सकता है? तब चोर ने कहा, ''आपको देखने से ऐसा लगता है कि आप एक महान हैं। इस रात में यहाँ ठहरने के लिए कोई स्थान मिलना कठिन है। यदि आपको कोई आपत्ति नहीं है तो मेरे यहाँ ठहर सकते हैं।'' यह सुनकर मैं थोड़ा हिचकने लगा। फिर मैंने सोचा कि अगर यह चोर ही मुझे देखकर निडर से रहता है तो मुझे क्यों डरना है? इसलिए मैंने उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

वह चोर मुझे अपने यहाँ ले गया और बडे प्यार से मेरी सेवा करने लगा। मैं उसके घर में एक महीने तक ठहरा। तब वह हर रोज रात को चोरी करने जाते समय मुझसे यही कहकर जाता कि आप अपने ध्यान करने के कार्य को कीजिए और मैं अपने काम पर जाता हूँ। हर दिन घर लौटने के बाद मैं उससे यही पूछता कि क्या आज कुछ मिला। पर वह यही जवाब देता कि आज मुझे कुछ नहीं मिला लेकिन मैं कल फिर कोशिश करूँगा। यदि ईश्वर की कृपा हो तो मुझे कल मिलेगा। आप भी मेरे लिए प्रार्थना कीजिए। मैंने कभी भी उसमें अविश्वास की भावना को नहीं देखा। वह सदा प्रसन्न रहता था।

एक महीने के बाद मैं जंगल में अपनी झोंपडी में आकर तपस्या करने लगा। कई साल तक कठोर तपस्या करने के बाद भी मुझे ईश्वर का दर्शन नहीं मिला। इससे मेरा मन हताश हो गया और मेरा विश्वास भी कमजोर होने लगा। यकायक मुझे उस चोर की याद आयी। वह इस विश्वास के साथ अपना हर दिन बिताता है कि आज न मिलने पर भी ईश्वर कल देंगे। यह सोचते ही मेरे मन में फिर प्रयास करने का उत्साह बढने लगा। इस प्रकार उस चोर के कारण मुझे अपने आत्मविश्वास में उत्तेजना प्राप्त हुई। इसलिए वह मेरा प्रथम गुरु है।

मेरा दूसरा गुरु एक 'कुत्ता' है। एक दिन जब मैं पानी पीने के लिए नदी की ओर गया था। तब मैंने देखा कि बडी प्यास से आया एक कुत्ता भी नदी में पानी पीने के लिए वहाँ आया था। उसने नदी के पानी में अपनी छाया को देखकर समझा कि कोई दूसरा कुत्ता वहाँ खडा है। इसलिए वह उसे भगाने के लिए भौंकने लगा। उसकी छाया भी उसको देखकर भौंकता था। इससे डरकर वह कुत्ता वापस लौट गया। पर अधिक प्यास के मारे वह फिर वहाँ आया। नदी में अपनी छाया को देखकर भौंक उठा, फिर हिम्मत से नदी में कूद पडा।

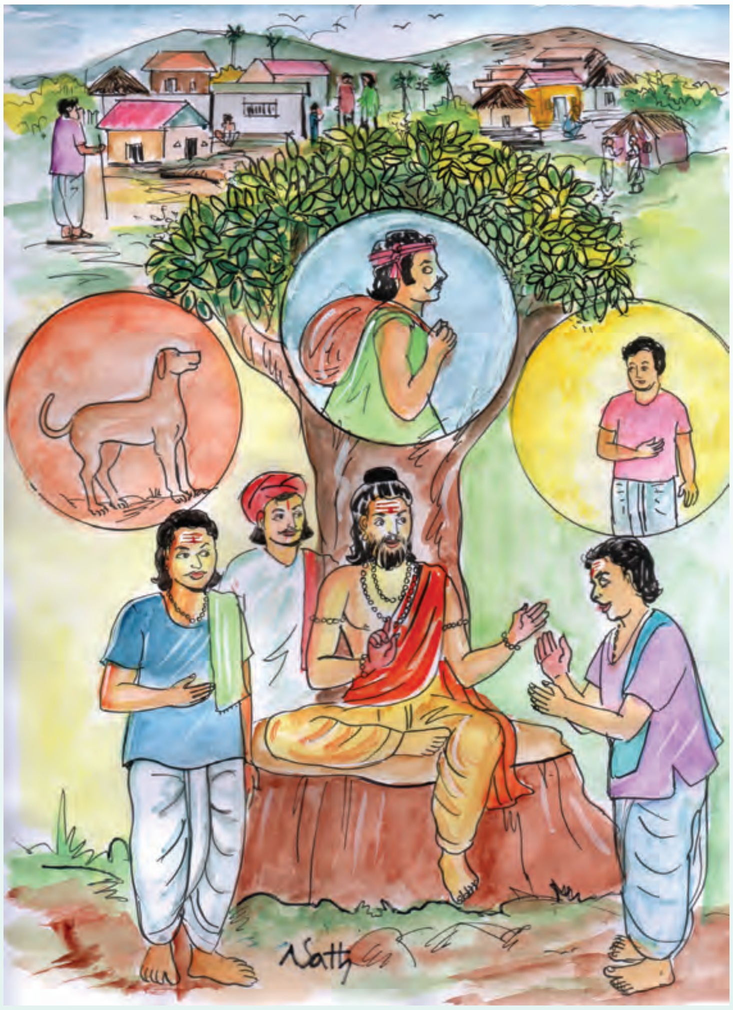

अब वहाँ दूसरे कुत्ते को न पाकर बडे आनंद से नहा लिया और उसने अपनी प्यास को भी बुझा लिया।

कुत्ते के ऐसे व्यवहार से मैंने समझा कि अपरिचित को देखकर हमें किसी भी हालत में भयभीत होकर पीछे हटना नहीं चाहिए। बल्कि बडी हिम्मत से आगे बढना चाहिए। ऐसा करने पर पता चल जायेगा कि वहाँ कुछ नहीं है। इसलिए जब अपरिचित को देखकर मन में डर पैदा होता है तब मुझे उस कुत्ते की याद आ जाती है। तब मेरी अज्ञानता दूर हो जाती है। इसलिए वह कुत्ता मेरा दूसरा गुरु है।

मेरा तीसरा गुरु एक 'छोटा बच्चा' है। एक बार मैं ऐसे ही जा रहा था। तब मैंने देखा कि एक छोटा बच्चा अपने हाथ में एक जलते दिये को लेकर जा रहा था। तब मैंने उससे मजाक में पूछा प्यारे बच्चे, क्या तुम ही इस माटी के दीप में प्रकाश को लाया? यह सुनकर बच्चा हँस पडा और जवाब दिया कि हाँ मैं ही लाया था। तब मैंने उस बच्चे से फिर पूछा कि क्या तुम बता सकते हो कि इस माटी के दिये में जब आग लगाया गया तब तुम ने देखा था। अब बताओ कि वह प्रकाश कहाँ से आया? यह सुनकर बच्चा जोर से हँस पडा और उस दीप को फूँकर बुझा दिया और मुझे देखकर पूछा कि अब तक आप ने उस प्रकाश को देखा था। आप जरा बताइये कि वह प्रकाश अब कहाँ चला गया?

बच्चे की ऐसी बात से मेरा घमंड चूरचूर हो गया। मैंने तत्क्षण अपनी अज्ञानता को समझ लिया। जब जब प्राप्त ज्ञान पर घमंड की भावना उठती है तब तब मैं उस बच्चे की याद कर लेता हूँ। तब मेरा घमंड तुरंत दूर हो जाता है। मेरे घमंड को दूर किया वह बच्चा मेरा तीसरा गुरु है।

卐

मई-2023 महीने का क्विज-10 के समाधान

1) प्रह्लाद, **2)** नारायणसूरि और लक्कमांबा,
3) अन्नमय्या, **4)** राजा सुवीर और रानी नंदिनी,
5) तुलसीदास, **6)** श्री गोविंदराजस्वामी,
7) तिरुपति प्रांत में / क्षेत्र में, **8)** ध्रुवा,
9) रेणुका, **10)** कूर्मावतार,
11) किशनदास,
12) भगवान श्रीकृष्ण,
13) पुंडरीकवल्लि तायार,
14) अनंत सत्यवर्तक विमान,
15) देव-दानव लोग.

चित्रकथा

गुरुदक्षिणा

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन्
चित्राकार - श्री टी.शिवाजी
अनुवादक - श्री सी.सुधाकर रेड्डी

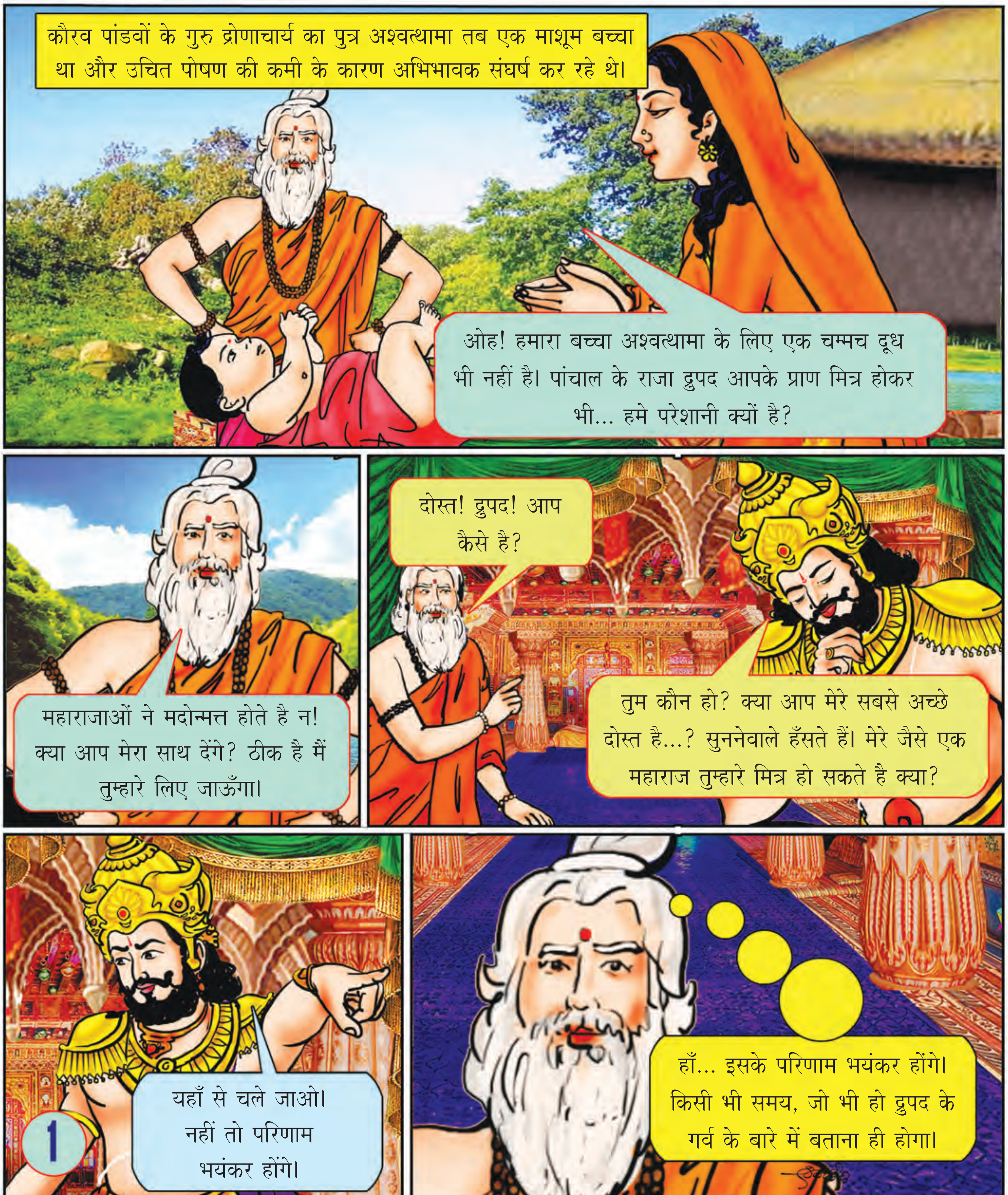

समयानुसार कुरु पांडवों की शिक्षा समाप्त हो गई।
गुरुदेव! आपने हमे ऐसे नायक बनाये। आपको गुरुदक्षिणा के रूप में क्या दे सकते है?
द्रुपद को पकड़कर गुरुदक्षिणा के रूप में लाना चाहिए...।
अर्जुन ने द्रुपद को युद्ध में हराने के बाद, उन्हें अपने रथ में बाँध लिया और द्रोणाचार्य के पास ले आया।
गुरुदेव! गुरुदक्षिणा ग्रहण करो।
कौन है यह आदमी? इन गहनों और रेशमी कपड़ों को देखकर, मुझे ऐसा लगता है कि यह तो द्रुपद की तरह दिखाई पड रहा है।
मित्र! द्रोण! मुझे क्षमा करो...!
क्या राज्याधिकार का गर्व अभी भी वश में है? सारे दिन हमारे नहीं है, द्रुपद! याद रखों!
अर्जुन! इनको बंधनों से मुक्त कर दो।
आज के लिए अपनी आँखे दिन-रात खुली रखें। मैंने इतना समय इंतजार किया। अब तक मेरी इच्छा पूरी हुई है।
2
विजयोस्तु चिरंजीवी! इतिहास की कीमत यह कहकर गुरुदक्षिणा चुकाई है कि मित्रता में कोई मतभेद नहीं होना चाहिए। तुम्हारी जय हो।
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-12

1) हम किसके जन्मदिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में मना रहे हैं?
ज)..
2) महाभारत के लेखक कौन है?
ज)..
3) मतंग मुनि की शिष्या का नाम क्या है?
ज)..
4) वेदव्यास के माता-पिता का नाम क्या है?
ज)..
5) भगवद्गीता में कितने अध्याय होते है?
ज)..
6) आनंदपुरम् नामक गाँव को पधारे महापुरुष का नाम क्या है?
ज)..
7) गर्गाचार्य का और एक नाम क्या है?
ज) ....
8) तिरुतेत्रियंबलम् नामक क्षेत्र के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज) ....
9) तिरुमणिक्कूडम् नामक क्षेत्र में तीर्थ पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज)..
10) तिरुमणिक्कूडम् क्षेत्र के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
11) आषाढ पूर्णिमा के दिन को क्या कहते हैं?
ज)..
12) द्रोणाचार्य के मित्र का नाम क्या है?
ज)..
13) वेदों को विभाजन कौन किया है?
ज)..
14) अर्जुन के गुरूजी का नाम क्या है?
ज)..
15) द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

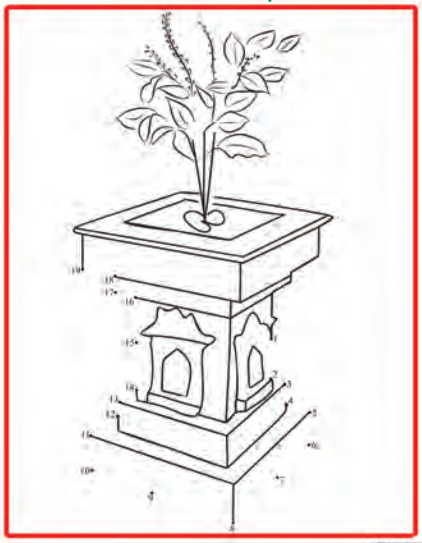

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) तुलसीदास	अ) रामायण
2) वाल्मीकि	आ) आमुक्तमाल्यदा
3) श्रीकृष्णदेवराय	इ) रामचरितमानस
4) वेदव्यास	ई) भगवद्गीता
5) श्रीकृष्ण	उ) महाभारत

1) इ 2) अ 3) आ 4) उ 5) ई

गुरु स्तोत्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म
तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

चित्र में अंतर खोजे!

१) पक्षी
२) घर का दीवार टूटा हुआ
३) घर को सहारा देती हुए चिपकना
४) रंगोली
५) झाड़ियाँ
६) फूलों का गुलदस्ता
७) केले का पेड़

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-; विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

....

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि.14.05.2023 से दि.18.05.2023 तक तिरुमल, आकाश गंगा तीर्थ के पास श्री हनुमज्ञयंती उत्सव अत्यंत वैभवोपेत ढ़ंग से संपन्न हुई है। इस संदर्भ में अर्चक स्वामीजी ने अभिषेक और विशेष पूजाएँ श्री अंजनादेवी के साथ श्री बालांजनेय स्वामीजी को निर्वाहण किया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मरेड्डी, आई.डी.ई.एस., ने भाग लिया। इस जयंत्योत्सव के संदर्भ में श्री कांचीकामकोटी पीठाधिपति श्रीश्रीश्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी ने तिरुमल, नादनीराजन मंडप में अपना अनुग्रह भाषण को दिया है। इस संदर्भ में भगवान जी का तीर्थ प्रसाद स्वामीजी को ति.ति.दे. के ई.ओ. ने सौंप दिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-06-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

आंडाल तिरुवाडिप्पुरम्

22-07-2023

कर्कटे पूर्वफल्गुन्यां तुलसीकाननोद्भवाम्।
पांड्ये विश्वंभरां देवीं वंदे श्रीरंगनायकीम्।।